www.hillmail.in

पहाड़ की चिट्ठी

हिल-मेल

₹25.00

एक अभियान पहाड़ों की ओर लौटने का

अप्रैल, 2022

शिखर पर उत्तराखंडी

टॉप-50 उद्यमी

With Best Compliments from

एस. के. पी. प्रोजेक्ट्स प्रा. लिमिटेड
S.K.P. PROJECTS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY

Residential Address : A-1, Shri Krishna Park, Opp. Novino Battery, Makarpura Road, Vadodara - 390 010.
Native Address : Mr. Suresh Chandra Pandey | S/o. Late Shri Kuomani Pandey
Village Bartoli, P.O. Panuwanoula, Dist. : Almora (Uttarakhand).

Mr. S. C. Pandey
Chairman & Managing Director

Mrs. Kamini Pandey
Director

We are proud to introduce ourselves as SKP Projects, stepping ahead with principles and providing custom tailored professional solutions. A core surveying professionally managed and experienced in a major projects carried out by the companies and having a cutting edge reputation in our business founded what is now called SKP Projects Pvt. Ltd, a surveying & GIS Company.
SKP Projects was established in the year 2000 in Vadodara district of Gujarat with the vision of providing services in the field of Pipeline Survey in India. The company is still headquartered in Vadodara and Corporate Office in Noida are having well equipped offices in Branch Offices : Agartala, Anantapur, Barauni, Bhopal, Bhubaneswar, Delhi, Durgapur, Guwahati, Haldwani, Hassan, Hyderabad, Lucknow, Nagpur, Prayagraj, Raipur, Siliguri, Visakhapatnam.

REGISTERED OFFICE
201-205, Sai Samarth Complex, Nr. Maneja Crossing,
Makarpura Road, Vadodara - 390 013, Gujarat, India.
Phone No. : 7228940501/502
Email : skp@skpprojects.com
Website : www.skpprojects.com

CORPORATE OFFICE
B-36, Sector - 67, Noida, Uttar Pradesh.

उद्यमिता में उत्तराखंडियों की दमदार दस्तक

आमतौर पर उत्तराखंड के लोगों को लेकर यह धारणा रही है कि वे सर्विस सेक्टर में काम करने को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन अब परिस्थितियां पहले जैसी नहीं हैं। जहां उत्तराखंड के लोग राष्ट्रीय-अतंरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रहे हैं, वहीं उद्यमिता के क्षेत्र में भी आगे आ रहे हैं। उत्तराखंड मूल के लोगों का देश के अलग-अलग हिस्सों में कामयाब उद्यमी के तौर पर उभरना इस बात का संकेत है कि आने वाले दिनों में देवभूमि के बेटे-बेटियां सफलता की एक नई कहानी लिखने जा रहे हैं।

हिल-मेल का ये विशेषांक पहाड़ के उन बेटे-बेटियों को समर्पित है, जिन्होंने देश और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अपनी मेहनत और लगन से कामयाबी की कहानी लिखी है। ये कामयाबी इसलिए भी खास हो जाती है कि यह ऐसे सेक्टर में मिली है, जिसे परंपरागत तौर पर उत्तराखंड के लोगों से जोड़कर नहीं देखा जाता। लेकिन अमेरिका हो या चीन, ब्रिटेन हो या मिडिल ईस्ट, या फिर महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली अथवा देश का कोई भी दूसरा हिस्सा। उत्तराखंड के इन सपूतों ने दिखा दिया है कि अगर वह देश के नीति-निर्धारक की भूमिका पूरे गर्व के साथ निभा सकते हैं तो औद्योगिक जगत में भी अपनी कामयाबी का झंडा बुलंद कर सकते हैं। इस विशेषांक में लंदन में इलारा कैपिटल्स जैसी कंपनी चला रहे राज भट्ट हों या अमेरिका में अपनी प्रतिभा का डंका बजा रहे शैलेष उप्रेती, वह ग्राफिक एरा जैसे संस्थान के संस्थापक डा. कमल घनशाला हों या चीन में विख्यात रेस्तरां चेन चलाने वाले देव रतूड़ी। मशरूम गर्ल के नाम से विख्यात दिव्या रावत हों या परिधि भंडारी, हिरेशा वर्मा, कविता बिष्ट या ममता रावत, सभी ने एक उद्यमी के तौर पर अलग पहचान बनाई है।

> उत्तराखंड के इन सपूतों ने दिखा दिया है कि अगर वह देश के नीति-निर्धारक की भूमिका पूरे गर्व के साथ निभा सकते हैं तो औद्योगिक जगत में भी अपनी कामयाबी का झंडा बुलंद कर सकते हैं।

प्रेरणा : अजीत डोभाल

प्रबंध निदेशक : **चेतना नेगी**
संपादक (दिल्ली) : **वाई एस बिष्ट**
संपादक (उत्तराखंड) : **अंकित शर्मा**

मानद सलाहकार
आलोक जोशी, पूर्व चीफ, एनटीआरओ
देश दीपक मिश्रा, पूर्व निदेशक, ओएनजीसी (एचआर)
वी.एम. चमोला, पूर्व निदेशक, एचएएल
वीके गौड़, पूर्व सीएमडी, एनएससी, पूसा
उर्मिला सिंह, समाजसेवी
अद्वैता काला, लेखिका

मेजर जनरल (रि.) शेरू थपलियाल, रक्षा विशेषज्ञ
मेजर जनरल (रि.) गुलाब सिंह रावत, रक्षा विशेषज्ञ
प्रवीण पाठक, महाप्रबंधक, ब्रह्मोस एयरोस्पेस
प्रो. अशोक डिमरी, जेएनयू, दिल्ली
टी.सी. उप्रेती, संस्थापक निदेशक, आई.ए.सी.
के.पी. कुकरेती, विधि सलाहकार
जय सिंह रावत, वरिष्ठ पत्रकार, देहरादून
पंडित अशोक सेमवाल, मुख्य पुजारी, गंगोत्री धाम
सुशील चंद्र बलूनी, वास्तु शास्त्री
सुशील जोशी, पूर्व एचआर हेड, अडानी
अनुराग पुनेठा, मीडिया हेड, इंदिरा गांधी कला केंद्र
शशि मोहन रावत, आर्ट डायरेक्टर, पाञ्चजन्य/आर्गेनाइजर

विशेष संवाददाता
देहरादून : **वर्षा सिंह**
ऋषिकेश : **प्रबोध उनियाल**
पिथौरागढ़ : **राजीव पांडे**
रुद्रप्रयाग : **मनोज सेमवाल**
लखनऊ : **अल्पना सिंह**
दुबई : **अजयपाल सिंह**
हिलमेल वेबसाइट : **महेन्द्र नेगी**
फोटो एवं वीडियो : **एसपी राणा**
डिजाइन : **सीमा रावत**
विधि सलाहकार : **शंकर डंगवाल**

संपर्क कार्यालय : हिल-मेल, 1515/जी 1-2, वजीर नगर, कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली - 110003
मोबाइल - 9971161880

उत्तराखंड कार्यालय - हिल-मेल, हाउस न. 152, राजेन्द्र नगर, देहरादून फोन : 9899003733
ई-मेल : mailtohillmail@gmail.com
वेबसाइट : www.hillmail.in

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
चेतना नेगी - बी-94, तृतीय तल, गली नम्बर 2, सेवा सदन ब्लाक, फजलपुर, मंडावली, दिल्ली - 110092 से प्रकाशित तथा मोडेस्ट पैक प्रा.लि., सी-52, डीडीए शेड्स, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1 नई दिल्ली से मुद्रित।

मोबाइल नं. : 9811985655
© सर्वाधिकार सुरक्षित

RNI REGD. DELBIL/2016/69806

01

राज भट्ट

सीईओ, इलारा कैपिटल, लंदन

यह पहाड़ के बेटे राज भट्ट की कहानी है, जिन्होंने विपरीत हालात में अपनी मेहनत और लगन से एक वैश्विक इनवेस्टमेंट बैंकिंग कंपनी इलारा कैपिटल खड़ी कर दी। आज इलारा कैपिटल का नाम पूरी दुनिया में बड़े अदब से लिया जाता है। खास बात यह है कि इलारा कैपिटल का स्वामित्व कंपनी के ही कर्मचारियों के पास है। राज भट्ट खुद कहते हैं कि उन्होंने तख्तियों पर पढ़ाई की। पिता ने सरकारी नौकरी छोड़ी और पहाड़ पर लोगों की सेवा करने की इच्छा से लोहाघाट चले आए। इसके कारण राज को भी लोहाघाट आना पड़ा। उन्होंने यहां के बेनीराम पुनेठा स्कूल से दसवीं की परीक्षा ऑर्ट्स से पास की। राज भट्ट के मुताबिक, वह आठवीं तक पढ़ने में कमजोर थे, उन्होंने नौवीं से पढ़ाई को गंभीरता से लेना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके स्कूल में सभी संकायों में सबसे ज्यादा अंक आए। लोगों को लगा कि उन्होंने नकल करके इतने अच्छे नंबर पाए। हालांकि 1978 में उन्होंने हाईस्कूल में बहुत अच्छे नंबर लाकर खुद को साबित कर दिया। उन्होंने स्कूल का रिकॉर्ड तोड़ा। स्कूल के बोर्ड पर आज भी उनका नाम लिखा है। इसी साल उनकी जिंदगी में ऐसा मोड़ आया जहां से सबकुछ बदल गया, उनके पिता की मौत हो गई। पिता के साया उठते ही परिवार की आजीविका का संकट आ गया। मां अपने गांव चंपावत चली गईं। इसके बाद वह रिश्तेदार के यहां रहने हल्द्वानी आए। उन्हें ऑर्ट्स में दाखिला नहीं मिला। कॉमर्स में एक सीट खाली थी और उन्होंने एमबी इंटर कॉलेज में दाखिला ले लिया। 12वीं सबसे ज्यादा अंक लाकर वह चर्चा का विषय बन गए। इसके बाद उन्होंने डीएसबी नैनीताल से आगे की पढ़ाई की। तब तक उन्हें 1200 रुपये की स्कॉलरशिप मिलने लगी थी। ग्रेजुएशन करने के बाद स्कॉलरशिप के पैसों के साथ वह दिल्ली पहुंचे, जेएनयू में पढ़ना चाहते थे लेकिन किसी कारणवश ऐसा हो न सका। उन्होंने पार्टटाइम नौकरी, ट्यूशन करते हुए सीए की तैयारी की। उस समय लोग उन्हें पहाड़ का लड़का कहकर चिढ़ाया करते लेकिन उसी पहाड़ के लड़के ने ऑल इंडिया में 33वीं रैंक लाकर सबको खामोश कर दिया। 1995 राज भट्ट को डीसीएम ग्रुप की ओर से दक्षिण अफ्रीका भेजा गया, वहां 8 महीने बिताने के बाद वह लंदन पहुंच गए। वह 1999 का दौर था जब कंपनी ने अपना बिजनेस बेचना शुरू किया। ऐसे में उन्हें लगा कि अब अपना कुछ करना चाहिए। इसके बाद उन्होंने साल 2000 में एडवाइजरी कंसलटेंसी को गंभीरता से लेना शुरू किया। उन्होंने देखा कि मॉर्किट में सभी बड़े बैंक हैं, कोई मिडसाइज बैंक नहीं है, ऐसे में साल 2002 में इलारा कैपिटल अस्तित्व में आई। इलारा कैपिटल पूरी तरह से इनवेस्टमेंट बैंक सेवा प्रदाता है। इस कंपनी का मुख्यालय लंदन में है और इसके अहमदाबाद, दिल्ली, दुबई, मॉरीशस, मुंबई, न्यूयॉर्क और सिंगापुर में ऑफिस हैं। ■

02

डा. कमल घनशाला

फाउंडर, ग्राफिक एरा समूह, देहरादून

ग्राफिक एरा समूह के संस्थापक डा. कमल घनशाला उत्तराखंड में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा नाम हैं। देहरादून स्थित ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी को भारत की बेहतरीन डीम्ड यूनिवर्सिटियों में शुमार किया जाता है। यूजीसी के स्वायत्त संस्थान नेशनल एसेसमेंट एंड एक्रीडिएशन काउंसिल यानी एनएएसी ने वर्ष 2015 में ग्राफिक एरा को 'ए' ग्रेड का दर्जा दिया। यह उत्तराखंड और उत्तर भारत क्षेत्र के सबसे बेहतरीन शिक्षण संस्थानों में से एक है। ग्राफिक एरा की शुरूआत वर्ष 1998 में हुई। तब इंजीनियरिंग और विज्ञान के अंडर ग्रेजुएट कोर्स कराए जाते थे। वर्ष 2008 में ग्राफिक एरा को डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा मिला। उसके बाद से ग्राफिक एरा हायर एजुकेशन के क्षेत्र में उत्तराखंड में एक बड़ा नाम बना हुआ है। डा. घनशाला ने कंप्यूटर साइंस में बीटेक करने के बाद एमटेक किया। ये वह दौर था जब बंगलुरू और मुंबई कंप्यूटर हब माना जाता था। उस दौर में घनशाला ने बड़े शहरों और विदेश न जाकर देहरादून आने का फैसला किया। यहां आने पर घनशाला ने देखा कि उत्तराखंड में बहुत बेसिक कंप्यूटर कोर्स कराए जा रहे हैं तो उन्होंने यहीं एक हाईहैंड पर्सनलाइज्ड कंप्यूटर सेंटर शुरू करने की सोची। 1993 में 29 हजार रुपये में 386 एसेंबल्ड कंप्यूटर से एक बड़े सपने की शुरूआत हुई। शुरूआती दौर में वह कैट के अथॉराइज्ड ट्रेनर भी रहे। इस दौरान सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट और ट्रेनिंग देने का सिलसिला चलता रहा। इस दौरान उन्होंने कुमाऊं यूनिवर्सिटी से कंप्यूटर साइंस में डॉक्टरेट की। कमल घनशाला के पिता पीडब्ल्यूडी में इंजीनियर थे। उन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा बेरीनाग, गोपेश्वर, गैरसैंण और मुनस्यारी से की। उन्होंने कर्नाटक यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की। हायर एजुकेशन के क्षेत्र में वर्ष 2017 में कमल घनशाला को 'विजनरी आंत्रप्रिन्योर ऑफ इंडिया' अवार्ड से सम्मानित किया गया। इससे पहले वर्ष 2016 में न्यूयॉर्क में आयोजित इंटरनेशनल क्वालिटी समिट में भी डॉ. कमल घनशाला को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक्सीलेंस के लिए गोल्ड अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

ग्राफिक एरा डीम्ड यूनिवर्सिटी शिक्षा के उच्च स्तर, दुनिया की नई टेक्नोलॉजी से सुसज्जित प्रयोगशालाओं, प्लेसमेंट में शानदार कीर्तिमान, नई खोजों और विश्व स्तरीय फैकल्टी के चलते लगातार सफलता के नए कदम बढ़ा रहा है। केंद्र सरकार की एनआईआरएफ रैंकिंग में वर्ष 2021 की टॉप यूनिवर्सिटी ग्राफिक एरा ने 75वां स्थान पाया है। देश के टॉप विश्वविद्यालयों की सूची में शामिल होने वाला यह उत्तराखंड राज्य का एकमात्र विश्वविद्यालय है। ■

03

डा. विजय धस्माना

स्वामी रामा हिमालयन यूनिवर्सिटी, देहरादून

क्रिएटिव तरीके से कम लागत में स्वास्थ्य की देखभाल, शिक्षा और सामाजिक विकास के मॉडल को उत्तराखंड के लोगों के उत्थान के लिए लागू करने की दिशा में काम करने के लिए डॉ. विजय धस्माना प्रख्यात हैं। वह इस समय स्वामी रामा हिमालयन यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर हैं। डॉ. धस्माना ने हिमालयन इंस्टीट्यूट को 1996 में बतौर कोषाध्यक्ष ज्वाइन किया था। इस संस्थान की स्थापना गुरूदेव स्वामी राम ने की थी। 1996 में डॉ. धस्माना को संस्थान की शीर्ष संस्था का सदस्य बनाया गया। 2007 से 2013 के बीच वह एचआईएचटी यूनिवर्सिटी के चांसलर रहे। इसके बाद उन्हें 2013 में स्वामी रामा हिमालय यूनिवर्सिटी का चांसलर बनाया गया। 1996 में जब गुरूदेव स्वामी राम का महाप्रयाण हुआ था, तब हिमालयन हॉस्पिटल 350 बेड का था और इसका मेडिकल कॉलेज शुरू ही हुआ था। लेकिन डॉ. धस्माना ने अपने कुशल नेतृत्व से इसे यूनिवर्सिटी में तब्दील कर दिया। आज यह 1000 बेड का हास्पिटल है। यहां 250 बेड का कैंसर संस्थान है। इसके अलावा आयुर्वेद केंद्र भी है, इसका ग्रामीण विकास संस्थान पहाड़ के 1000 गांवों में शिक्षा, पानी और साफ-सफाई के क्षेत्र में काम कर रहा है। गढ़वाल क्षेत्र के 325 गांवों में पीने का साफ पानी मुहैया करा रहा है। पौड़ी के दुधारखाल के मल्ला बादलपुर के तोली गांव में 23 अक्टूबर 1968 को जन्में डॉ. धस्माना ने अपनी शुरूआती पढ़ाई गांव से ही की। इसके बाद वह ऋषिकेश आ गए। ऋषिकेश से बीएससी और एमएससी (गणित) में करने के बाद डॉ. धस्माना ने एमएससी कम्प्यूटर साइंस से की। उन्होंने यह डिग्री यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन से की। इसके बाद डॉ. धस्माना ने गणित में पीएचडी की। डॉ. धस्माना की पत्नी डॉ. रेनु धस्माना प्रख्यात रेटीना सर्जन हैं। उनके दो बच्चे वैभवी और विदिप्त हैं। कोरोना काल में स्वामी रामा हिमालयन अस्पताल ने एक बड़ी भूमिका निभाई। डा. धस्माना का मानना है कि कोरोना काल को हमें अवसर के रूप में लेना चाहिए। जो युवा निचले इलाकों में छोटे-मोटे काम कर रहा था, अगर हम उनकी हैंड होल्डिंग कर सकें.... हम उन्हें साधन दें तो तस्वीर बदल सकती है। कृषि, पर्यटन, हेल्थ टूरिज्म, होम स्टे जैसे तमाम क्षेत्र हैं। स्वामी रामा हिमालयन यूनिवर्सिटी ने उत्तराखंड के लिए क्रांतिकारी होम स्टे योजना के लिए सौ से ज्यादा युवाओं को प्रशिक्षण दिया है। डा. धस्माना का मानना है कि पहाड़ की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए बड़ी कंपनियां वहां नहीं जा रही हैं। ऐसे में लोकल लेवल पर उत्पाद जरूर बनाया और अनाज उगाया जा सकता है। बागवानी, जैविक खेती, पर्यटन, विलेज टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाए तो रोजगार की टेंशन दूर हो सकती है। ■

04

नरेंद्र सिंह लडवाल

संस्थापक सी हॉक ट्रैवल्स प्रा. लि. दिल्ली

कहते हैं कि सफल होने की सबसे बड़ी शर्त यह है कि आप खुद को किसी खांचे में बांधकर न रखें। चंपावत जिले के नरेंद्र सिंह लडवाल की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। उन्होंने एक विदेशी कंपनी में लंबे समय तक काम किया। लेकिन मार्केट और उद्योग की जरूरत को समझते हुए जैसे ही मौका मिला उन्होंने अपना बिजनेस खड़ा किया और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। लॉजिस्टिक ट्रांसपोर्ट, हॉस्पिटैलिटी और शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने सफलता की बुलंदियां छुईं। उनके मन में अपने जिले और प्रदेश के लोगों को आगे बढ़ाने की सोच थी। आज वह दो हजार से ज्यादा उत्तराखंड के लोगों को रोजगार दे रहे हैं। नरेंद्र सिंह लडवाल चंपावत जिले के राउलमल गांव के रहने वाले हैं। उनके पिता एक शिक्षक थे। नरेंद्र ने गांव में ही प्राथमिक शिक्षा पूरी की और 9 से 12वीं तक की पढ़ाई सरकारी इंटर कॉलेज से पूरी की। स्कूली शिक्षा के बाद उन्होंने काशीपुर में पॉलिटेक्निक की पढ़ाई शुरू की और यूपी टेक्निकल बोर्ड के तहत मैकेनिकल इंजीनियरिंग में 3 साल का डिप्लोमा किया। इसके बाद उन्हें सरकारी नौकरी मिल गई लेकिन वह उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली आ गए और यहां अंसल समूह में नौकरी मिल गई। यहां उन्होंने 2 साल काम किया। इसके बाद उन्हें एक जर्मन कंपनी से ऑफर मिला और उन्होंने पूरे 10 साल तक असिस्टेंट इंजीनियर से लेकर सीनियर मैनेजर तक विभिन्न पदों पर सेवाएं दी। 1990 में उनकी शादी हो गई और उनके दो बच्चे भी उच्चशिक्षा पूरी कर चुके हैं। मार्केट के हालात और उद्योगों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, साल 1999 में उन्होंने एनसीआर में लॉजिस्टिक ट्रांसपोर्ट बिजनेस (सी हॉक ट्रैवल्स प्राइवेट लिमिटेड) शुरू किया। आज उनकी कंपनी का अपने क्षेत्र में नाम है और गुरुग्राम, दिल्ली, नोएडा, मुंबई, पुणे, बेंगलुरु, हैदराबाद और चेन्नै में कार्यालय हैं। यह प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सेवाएं प्रदान कर रही है। उन्होंने हॉस्पिटैलिटी के क्षेत्र में भी अपना बिजनेस शुरू किया और 2004 में भीमताल रिजॉर्ट और 2007 में मसूरी होटल और 2010 में चंपावत होटल शुरू किया। वह यहीं तक नहीं रुके। शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखते हुए 2007 में कानपुर में इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट कॉलेज शुरू किया। 2014 में उधमसिंह नगर के सितारगंज में 50 एकड़ जमीन पर उन्होंने पूरी तरह से आवासीय विद्यालय शुरू किया। 2012 में फैसिलटी मैनेजमेंट कंपनी शुरू की और कुल 5000 से ज्यादा कर्मचारियों को रोजगार दे चुके हैं। नरेंद्र सिंह लडवाल बताते हैं कि उत्तराखंड के 2000 से अधिक लोग उनके बिजनेस का हिस्सा हैं। इस समय वह अपने जिले चंपावत में गरीब विद्यार्थियों के कल्याण पर ध्यान देने के साथ ही स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम चला रहे हैं। ■

05

सुरेश चंद्र पांडे

सीएमडी, एसकेपी प्रोजेक्ट प्रा.लि., वडोदरा

सुरेश चंद्र पांडे उत्तराखंड के जाने-माने उद्योगपति हैं। उनका जन्म 9 जनवरी 1968 को अल्मोड़ा के बर्तोली में हुआ। प्राइमरी की शिक्षा प्राथमिक विद्यालय तोली से लेने के बाद 10वीं तक की शिक्षा गांधी इंटर कॉलेज पनुवानौला से फिर 12वीं तक की पढ़ाई रा. इ. कॉलेज बाड़ेछीना से की। 1987-89 में अल्मोड़ा से आईटीआई किया। इसके बाद अपनी किस्मत आजमाने भाई के पास वड़ोदरा चले गए। भाई सेना में थे और छह महीने बाद ही उनकी यूनिट दूसरी जगह चली गई। अब युवा सुरेश चंद्र पांडे के पास दो उपाय थे, एक अल्मोड़ा लौट आना और दूसरा वडोदरा में ही अपना भाग्य बनाना। सन् 1990 में ओएनजीसी वडोदरा में बतोर सर्वेयर करियर शुरू किया। सन् 1991-95 तक एमएस यूनिवर्सिटी से सिविल में पार्ट टाइम डिप्लोमा किया। उन्हें कुछ और करना था, अपना व्यापार शुरू करना था। इसलिए साल 1996 में ओएनजीसी से अलग हो गए और अपना काम शुरू किया। 26 जून 2000 को उन्होंने एस. के.पी प्रोजेक्ट प्रा. लि. नाम से अपनी कंपनी की स्थापना की। वर्तमान में उनकी कंपनी ओएनजीसी, गेल, एचपीसीएल, बीपीसीएल, जीएसपीसी, मेकॉन, नुमाली गढ़ रिफाइनरी, असम गैस जैसे सभी नामचीन पेट्रोलियम कंपनियो के साथ सर्वे कंसलटेंसी, कंस्ट्रक्शन का काम कर रही है। वर्तमान में वडोदरा में प्रधान कार्यालय, एनसीआर में कॉर्पोरेट ऑफिस के अलावा गुवाहाटी (असम), अगरतला, दुगार्पुर (पश्चिम बंगाल), भुवनेश्वर, रांची, रायपुर, नागपुर, जबलपुर, भोपाल, इंदौर, सिलीगुड़ी, बरौनी, हैदराबाद, राजमुंद्री (बेंगलुरू), हसन, विशाखापट्नम समेत कई जगहों पर कार्यालय हैं। उनकी कंपनी में लगभग 8000 कर्मचारी अपनी आजीविका अर्जित कर रहे हैं। इनमें लगभग 50 प्रतिशत कर्मचारी उत्तराखंडी है। सुरेश चंद्र पांडे ने पहाड़ से आने वाले युवाओं ट्रेनिंग देकर अपनी कंपनी में रोजगार उपलब्ध करवाया है।

व्यवसाय में व्यस्तता के बावजूद वह सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेते रहते हैं। उत्तराखंड में बड़े पैमाने पर व्यवसाय करने की इच्छा को पूरा करने के लिए सुरेश पांडे ने 1998 से उत्तराखंड में रोड एवं बिल्डिंग के कई प्रोजेक्टों पर काम किया। इन सभी प्रोजेक्टों में उत्तराखंडियों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है। इसके अलावा सितारगंज हल्द्वानी में व्यवसाय शुरू करने के लिए जमीन का भी अधिग्रहण किया है, जिसमें भविष्य में बड़े प्रोजेक्ट शुरू करने की योजना है। ■

06

जगदीश पांडे

कंट्रीवाइड ग्रुप्स, दिल्ली

उत्तराखंड के बागेश्वर के रहने वाले जगदीश चंद्र पांडे कंट्रीवाइड ग्रुप्स से जुड़े हैं। उनका दिल्ली में ट्रांसपोर्ट का बिजनेस है। उनकी कंपनी पैन इंडिया लेबल पर यह काम करती है। उनकी कंपनी मल्टीनेशनल कंपनियों, पीएसयू को गाडियां उपलब्ध कराते हैं। इसके अलावा मैन पावर का भी बिजनिस भी है। उत्तराखंड में कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल की चेन है। कंपनी द्वारा 7 स्कूलों को संचालन किया जा रहा है। आठवां स्कूल हल्द्वानी में शुरू किया गया है। जगदीश पांडे स्कूल संचालित करने वाली सोसाइटी के वाइस चेयरमैन हैं। वहीं ट्रांसपोर्ट बिजनेस में पार्टनर हैं। उनकी कंपनी 25 स्टेट में काम कर रही है। कंपनी ने 1200-1300 लोगों को रोजगार दे रखा है।

बागेश्वर के कठैतबाड़ा गांव में जन्में जगदीश पांडे 7 भाई-बहन हैं। पिता हार्टिकल्चर विभाग में थे। 12वीं तक की पढ़ाई बागेश्वर से की। इसके बाद रोजगार के लिए पलायन कर दिल्ली आना पड़ा। दिल्ली आकर पहले छोटी-मोटी नौकरी की। इसके बाद एनआईटी से कम्प्यूटर कोर्स किया। दिल्ली में काम के साथ-साथ पढ़ाई भी जारी रखी। इसके बाद बड़े भाई मोहन पांडे ने बिजनेस शुरू किया।

1997 में पहली गाड़ी से शुरूआत की। उसके बाद धीरे-धीरे काम को आगे बढ़ाया। 1997 से 2000 तक बहुत संघर्ष किया। साल 2000 तक उनके पास 35 गाडियां हो गईं। इसके बाद विचार आया कि पहाड़ से निकले हुए हैं तो पहाड़ के लिए कुछ किया जाए। पांडे बंधु शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े और बागेश्वर 2002 में स्कूल की नींव रखी, जिसका शिलान्यास तत्कालीन केंद्रीय मंत्री बच्ची सिंह रावत ने किया। उसके बाद स्कूल का उद्घाटन उत्तराखंड के तत्कालीन राज्यपाल सुदर्शन ने किया। पहाड़ों में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार न होने से पलायन ज्यादा होता है तो उत्तराखंड के सुदूर क्षेत्र कपकोड़, कांडा से शुरूआत की। आजकल बागेश्वर में उनके ग्रुप के साथ 300 लोग काम कर रहे हैं। दिल्ली में भी ट्रांसपोर्ट के बिजनेस से 700-800 लोग जुड़े हुए हैं। कंट्रीवाइड ग्रुप्स पैन इंडिया लेवल पर काम कर रही है। इसमें भी अधिकतर उत्तराखंड के लोग हैं। शिक्षा के क्षेत्र में दुबई में इंटरनेशनल अवार्ड, बेस्ट ट्रांसपोर्ट सप्लाई के लिए गेल इंडिया से अवार्ड मिल चुका है। ■

07

डा. नवीन बलूनी

चेयरमैन, बलूनी ग्रुप ऑफ एजुकेशन, देहरादून

बलूनी ग्रुप ऑफ एजुकेशन के चेयरमैन डा. नवीन बलूनी ने बलूनी क्लासेस की स्थापना 1999 में इस संकल्प के साथ की ताकि प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का सुअवसर मिले औरआर्थिक कमजोरी कोई बाध ना बने। 1974 में पौड़ी गढ़वाल जिले के अंतर्गत पट्टी अजमेर के ग्राम बागी में सेना में सेवारत जर्नादन प्रसाद बलूनी के यहां डा. नवीन का जन्म हुआ। प्राथमिक पढ़ाई गांव के ही स्कूल में करने के बाद नवीन उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए शहर आ गए। जीवन में कुछ कर दिखाने का जज्बा लिए वे हर कक्षा में बेहतर अंकों के साथ उत्तीर्ण होते रहे और सन् 1992 में शीर्ष रैंक के साथ सीपीएमटी में उत्तीर्ण होकर आगरा के सुविख्यात एसएन मेडिकल कॉलेज में दाखिला ले लिया। एक मध्यम वर्गीय परिवार के लिए मेडिकल के भारी-भरकम खर्च वाले पांच वर्षीय कोर्स को कराना सहज नहीं था लेकिन पिता ने बच्चे की काबलियत को भांपते हुए उसे जबरदस्त प्रोत्साहित किया और बालक ने भी अपने पिता के अरमानों पर खरा उतरते हुए सपफलतापूर्वक एमबीबीएस की डिग्री हासिल कर ली, तत्पश्चात दो विषयों रेडियोलॉजी व फिजियोलॉजी में एमडी किया।

बलूनी ग्रुप आज उत्तर भारत के अग्रणी शिक्षण संस्थानों में गिना जाता है। बलूनी क्लासेस ने देश को पिछले 22 साल के दौरान हजारों डाक्टर और इंजीनियर दिए हैं। उत्तराखंड में हर नया तीसरा डाक्टर बलूनी ग्रुप का प्रॉडक्ट है। बलूनी क्लासेस को सफलता के शिखर पर ले जाने में डा. नवीन बलूनी की अथक मेहनत, कुशल प्रबंधन और दूरदर्शिता है। बलूनी ग्रुप मेडिकल और इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा की कोचिंग के साथ ही स्कूली शिक्षा को नया आयाम दे रहा है। बलूनी ग्रुप की नींव 1999 में आगरा में पड़ी। डा. नवीन बलूनी ने दो गरीब छात्रों को निःशुल्क मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी करवाई और दोनों ही सफल हो गए। इसके बाद डा. नवीन बलूनी ने बलूनी क्लासेस की नींव रखी। आगरा में शिखर पर पहुंचने के बाद बलूनी क्लासेस की देहरादून में शुरुआत हुई। यहां की बागडोर प्रबंध निदेशक विपिन बलूनी ने बखूबरी संभाली। आज बलूनी क्लासेस आगरा, देहरादून और कोटद्वार में है। बलूनी ग्रुप आफ एजूकेशन के तहत छात्रों को स्कूली शिक्षा दी जा रही है। ग्रुप के आगरा, मथुरा, देहरादून और कोटद्वार में तीन बोर्डिंग स्कूल समेत नौ स्कूल हैं। हाल में सेलाकुई में माया बलूनी फाइव डे बोर्डिंग स्कूल शुरू किया है। यह एक यूनिक कंसेप्ट है। इसके तहत छात्र सप्ताह में पांच दिन हॉस्टल और दो दिन घर में रहेगा। बलूनी ग्रुप के स्कूलों में इंटीग्रेडिट एजुकेशन दी जा रही है यानी 9वीं से 12वीं तक के बच्चों को स्कूली पढ़ाई के साथ ही मेडिकल, इंजीनियरिंग और एनडीए के लिए तैयारी कराई जाती है। ■

08

गजेंद्र सिंह रावत

सीएमडी, सुप्रीम एडवरटाइजिंग प्रा. लि., दिल्ली

दिल्ली के कामयाब व्यवसायी गजेंद्र सिंह रावत का जन्म 14 जनवरी 1955 को पौड़ी के नैनीडांडा ब्लॉक के एक छोटे से इलाके में हुआ। सातवीं तक गांव में पढ़ाई के बाद गजेंद्र सिंह के भाई उन्हें दिल्ली ले आए। यहां उन्होंने लोधी कॉलोनी के सरकारी स्कूल से पढ़ाई शुरू की। 12वीं के बाद दिल्ली के प्रतिष्ठित कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग पहुंचे। वर्ष 1978 में इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त करने के तुरंत बाद सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी में नौकरी मिली। कुछ ही समय बाद एनएचपीसी ज्वाइन कर ली। शुरूआती तीन साल में तेजी से पदोन्नति मिली लेकिन मन काम में नहीं लग रहा था। मन में यही भावना थी कि अपना काम शुरू किया जाए। एनएचपीसी के अनुभव ने नौकरी छोड़ने और बिजली संयंत्र की स्थापना का काम शुरू करने के लिए विश्वास देने का काम किया। 1991 में एक फ्रांसीसी कंपनी ने डीजल पावर हाउस के निर्माण का काम दिया। महज 14 लाख रुपये से ये सफर शुरू हुआ।

गजेंद्र सिंह के कारोबार के पहले साल का ही टर्नओवर लगभग 40 लाख रुपये रहा। हालांकि उस समय नौकरी के दौरान उन्हें महज 5 हजार रुपये तनख्वाह मिलती थी और वह सोचते थे कि इसके कुछ ज्यादा मिलेगा तो काम चल जाएगा। कुछ ही समय में अच्छा अनुभव होने के बाद गजेंद्र सिंह ने नापथा झाकरी हाइडिल प्रोजेक्ट के लिए काम करना शुरू किया और तीन साल में उनकी कंपनी का टर्नओवर बढ़कर 10 करोड़ जा पहुंचा। 1994 में उन्होंने अपनी कंपनी को पार्टनरशिप से पब्लिक लिमिटेड कंपनी में बदला और देखते ही देखते यह सिलसिला 100 करोड़ रुपये के कामकाज तक जा पहुंचा।

हालांकि बिजनेस तेजी से बढ़ रहा था, इसे चलाने के लिए ज्यादा फंड्स चाहिए थे, शायद तब तक वह अपना एक्जिट प्लान तैयार कर चुके थे। साल 2008 में गजेंद्र सिंह अपने पारिवारिक शेयर बेचकर कंपनी से अलग हो गए। हालांकि इससे पहले ही, साल 2000 में ही गजेंद्र सिंह दिल्ली में बीओटी के आधार पर हाईटेक पब्लिक टॉयलेट्स के कंस्ट्रक्शन का काम शुरू कर चुके थे और उन्होंने इसे चंडीगढ़ तक विस्तार दिया। वह हाइथ्रो इंजीनियर्स प्रा. लि., सुप्रीम एडवरटाइजिंग प्रा. लि. और हेनक्राफ्ट एक्सपो डिजाइन प्रा. लि. के सीएमडी हैं। ■

09

डा. शैलेश उप्रेती

संस्थापक, सी4वी, अमेरिका

डा. शैलेश उप्रेती कोबाल्ट मुक्त लीथियम आयन बैट्री के लिए अगली पीढ़ी के स्मार्ट कारखानों के निर्माण को समर्पित अंतरराष्ट्रीय संघ आईएम3एनवाई के बोर्ड के चेयरमैन हैं। वह अगली पीढ़ी के एनर्जी स्टोरेज के व्यवसायीकरण पर केंद्रित स्टार्टअप सी4वी के संस्थापक और अध्यक्ष हैं। वह एक उद्यमी, संरक्षक और कई सफल तकनीकों के आविष्कारक हैं। नई तकनीकों को आगे बढ़ाने के लिए रणनीति विकसित करने में उनका 20 साल का अनुभव है। उन्होंने शिक्षा और उद्योग के क्षेत्र में अहम योगदान किया है। उनके 100 से ज्यादा आर्टिकल अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। उनके पास अमेरिका में 6 से अधिक पेटेंट हैं। क्लीन एनर्जी के क्षेत्र में उनकी नवीन ऊर्जा भंडारण प्रौद्योगिकी के लिए उन्हें दुनिया की सबसे बड़ी व्यावसायिक प्रतियोगिता में 5,00,000 डॉलर का नकद पुरस्कार मिला है।

वह उत्तराखंड के एक छोटे से गांव में पैदा हुए। शुरूआती पढ़ाई के बाद वह डॉक्टरेट करने आईआईटी दिल्ली पहुंचे। प्रौद्योगिकियों के विकास और व्यावसायीकरण में उनके पास 19 साल से ज्यादा का अनुभव है। ऊर्जा भंडारण तकनीक और उद्यमिता पर वह कई वाताओं और सम्मेलनों में शामिल हो चुके हैं। वह Li-ion तकनीक और एनर्जी स्टोरेज के विकास को लेकर अमेरिका की नैशनल लैब के साथ मिलकर काम किया है। इसके साथ ही शिक्षा, ऊर्जा और लोक संगीत में 15 साल से परोपकारिता भी कर रहे हैं। वह कई कंपनियों के सलाहकार बोर्ड में शामिल रहे हैं जिससे रिसर्च और व्यवसायीकरण के बीच गैप को दूर किया जा सके।

उप्रेती कहते हैं कि तकनीक का फायदा तभी है जब यह सस्ती हो और आम आदमी इससे लाभान्वित हो सके। इसी दिशा में उनका प्रयास रहता है। ■

10

पूरन टम्टा

मेंटर, स्टार्टअप्स एंड बिजनेस ग्रुप्स, दिल्ली

जो लोग सोचते हैं कि सफलता सिर्फ किस्मत से मिलती है उनके लिए बिजनस आइकन पूरन टम्टा का जीवन प्रेरणा है। उनका दृढ़ संकल्प दूसरों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकता है। उत्तराखंड और दुनिया के हर कोने में रहने वाले बहुत से लोगों के सर्वांगीण विकास के लिए उनके समर्पण भाव ने हजारों लोगों के दिल जीते हैं। उत्तराखंड की खूबसूरत वादियों में जन्मे पूरन टम्टा प्रौद्योगिकी, आयात-निर्यात, सिमुलेशन, ऑटो आनुषांगिक और वैकल्पिक ईंधन और कृषि उत्पादों के क्षेत्र में कई कंपनियों के सीईओ और संस्थापक हैं।

वह उत्तराखंड के बागेश्वर जिले के एक छोटे से कस्बे गरूर से ताल्लुक रखते हैं। उनका परिवार क्षेत्र के सम्मानित और प्रसिद्ध परिवार से है लेकिन वह हमेशा जमीन से जुड़े और विनम्र बने रहे हैं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से विज्ञान की पढ़ाई की और उत्तराखंड में अपनी जन्मभूमि के विकास की दिशा में काम करना शुरू किया। उन्होंने प्रकृति की बेहतरी के बारे में सोचा। राष्ट्र, प्रकृति और पर्यावरण को लौटाने की सोच के साथ उन्होंने वैकल्पिक ईंधन के क्षेत्र में काम करना शुरू किया। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के तहत दिल्ली में सीएनजी शुरू करने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने उत्तराखंड के चंपावत और नौटी क्षेत्र के 500 हेक्टेयर से अधिक में फैली जैविक चाय का विकास और उत्पादन के द्वारा प्रदेश में चाय बागानों को पुनर्जीवित करने में बहुत बड़ा योगदान किया। वह जैविक खेती के तरीकों को प्रोत्साहित करते हैं और इंडिया ऑर्गेनिक के साथ जुड़े हुए हैं। वह एक सशक्त उद्यमी होने के साथ ही कई स्टार्टअप और व्यावसायिक समूहों के मेंटर हैं। उनकी सोच है कि आय का महत्व किसी की मदद करने में है। वह दूसरों, हमारे समुदायों और बड़े पैमाने पर दुनिया की भलाई के लिए जीना चाहते हैं। वह बिना कोई प्रसिद्धि या चर्चा बटोरे समाज और जरूरतमंदों की मदद करते हैं।

उन्होंने उत्तराखंड में 50 से अधिक बच्चों को गोद लिया है और स्कूली शिक्षा, भोजन और समग्र विकास सहित उनकी सभी जरूरतें पूरी कर रहे हैं। वह अपने जिले किसानों की छोटी-छोटी जरूरतें भी पूरी करने के लिए तत्पर रहते हैं चाहे वह बीज हो, उर्वरक हो, उपकरण या ट्रैक्टर। वह किसानों को जैविक खेती के लिए भी जोर देते हैं। वह पशुपालन क्षेत्र में भी वित्तीय योगदान करते हैं। उन्होंने गरूर, बागेश्वर में एक विशाल मंदिर बनवाया है। यहां लोग पूजन अर्चन के लिए आते हैं। जरूरतमंद बेटियों की शादी में भी वह आर्थिक मदद करते हैं। ■

11

सुकेश नैथानी

संस्थापक, ट्राइडेंट टेकलैब्स, दिल्ली

सुकेश नैथानी नवाचार को बढ़ावा देने वाले, जोखिम लेने वाले और असाधारण नेतृत्व क्षमता से युक्त पहली पीढ़ी के उद्यमी हैं। उनकी पहचान एक उत्कृष्ट उद्यमी की है। जिम्मेदार नेतृत्व और उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें वर्ष 2011 में मोस्ट प्रोमिसिंग एंटरप्रेन्योर अवार्ड; एशिया पैसिफिक एंटरप्रेन्योरशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया था। सुकेश नैथानी का जन्म पौड़ी गढ़वाल जिले के एक छोटे से गांव कौडला में हुआ था। नरेंद्र नगर से प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने गढ़वाल विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और वर्ष 1986 में विज्ञान से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। यह वह समय था जब भारत में कंप्यूटर क्रांति हो रही थी। इस महान क्रांति का हिस्सा बनने के लिए सुकेश नैथानी ने नई दिल्ली का रुख किया। यहां उन्होंने प्रियदर्शिनी संस्थान में प्रवेश लिया और कंप्यूटर विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया। उन्होंने मेसर्स माइक्रोनिक्स डिवाइसेस; इंटेल कॉर्पोरेशन यूएसए के भारतीय भागीदार और उन दिनों लाइन प्रिंटर की अग्रणी कंपनी मेसर्स लिपि डेटा सिस्टम की मार्केटिंग टीम के साथ अपने पेशेवर करियर की शुरूआत की। देश में तकनीकी शिक्षा के मानकों में सुधार के उनके जुनून ने उन्हें वर्ष 2000 में अपनी खुद की कंपनी. ट्राइडेंट टेकलैब्स प्राइवेट लिमिटेड स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। 20 वर्षों की अपनी यात्रा में ट्राइडेंट टेकलैब्स ने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कीं। आज देश भर के 1300 तकनीकी संस्थानों के साथ ट्राइडेंट टेकलैब्स के व्यावसायिक संबंध हैं। सुकेश नैथानी के सक्षम नेतृत्व में ट्राइडेंट टेकलैब्स ने अपने संचालन का विस्तार किया और डीआरडीओ तथा अंतरिक्ष अनुसंधान संगठनों के लिए अनुसंधान भागीदार के रूप में काम किया। टेकलैब्स न केवल भारत में बल्कि बांग्लादेश, चीन और मध्य पूर्व के कई देशों में विभिन्न बिजली वितरण कंपनियों के तकनीकी सलाहकार भी है। ट्राइडेंट टेकलैब्स प्राइवेट लिमिटेड; लोकप्रिय नाम टेकलैब्स एक ज्ञान आधारित कंपनी है। यह कंप्यूटर एडेड इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक डिजाइन, विकास, तकनीकी शिक्षा और इलेक्ट्रिकल पावर सिस्टम की दक्षता अनुकूलन सहित कई विशिष्ट सेवाएं प्रदान करती है। कंपनी का कॉरपोरेट मुख्यालय दिल्ली में है और बैंगलुरू, हैदराबाद, पुणे और कोलकाता जैसे सभी प्रमुख शहरों में कार्यालय हैं। कंपनी के ग्राहकों में रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ), बिजली वितरण कंपनियां जैसे एनडीपीएलए टाटा पावर, टोरेंट पावर, अडानी पावर, रिलायंस पावर और विभिन्न राज्य सरकारें शामिल हैं। कंपनी का हर मार्केट सेगमेंट में एक मजबूत ग्राहक आधार है। प्रतिबद्ध 115 इंजीनियरों की टीम वाली टेकलैब्स का पंजीकृत राजस्व 50 करोड़ रुपये से अधिक है। ■

12

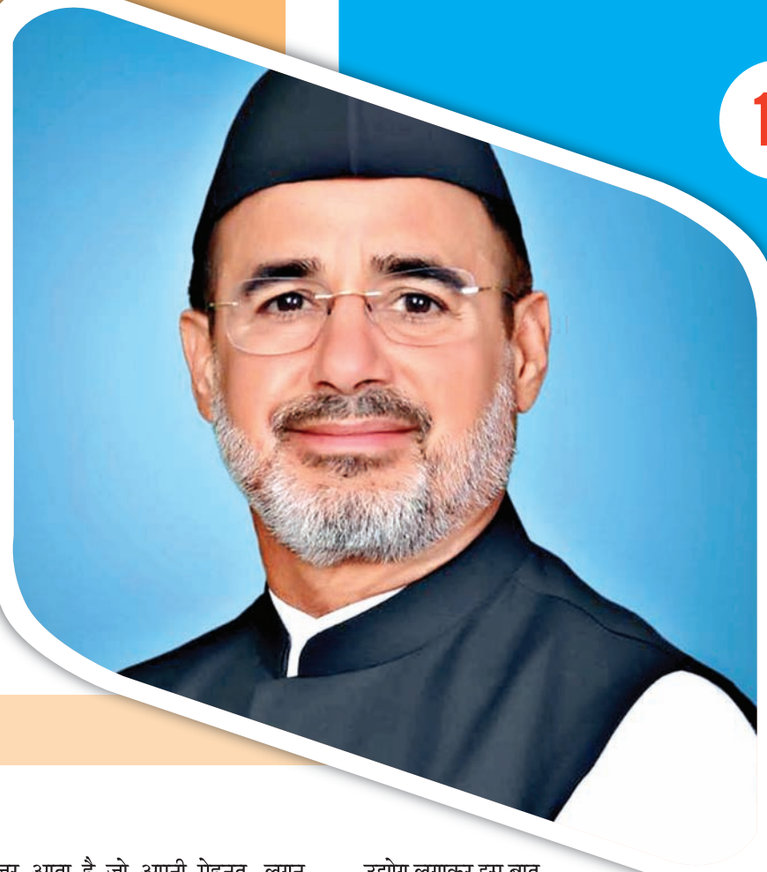

मोहन काला

उद्योगपति, मुंबई

उनमें एक आम पहाड़ी नजर आता है जो अपनी मेहनत, लगन, प्रतिबद्धता, ईमानदारी और सरलता से सफलता का नया आकाश बनाता है। वह ऐसी जमीन तैयार कर रहे हैं, जो बहुत से लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने वाली जगह बने। जी हां, पहाड़ के लोगों को आगे बढ़ाने की भावना, अपनी संस्कृति-भाषा को आगे बढ़ाने की सोच, युवाओं के सपनों को सच करने वाली नीतियों के जानकार, पहाड़ की महिलाओं के दर्द को गहराई से समझने वाले शख्स का नाम है मोहन काला। पौड़ी जनपद के सुमाड़ी गांव से निकलकर वह मुंबई पहुंचे। बाद में अपने लोगों के लिए कुछ करने के इरादे से वह अपने पहाड़ को लौटे। पौड़ी जनपद के सुमाड़ी गांव में उनका जन्म हुआ। गरीब घर से ताल्लुक रखने वाले काला जी की प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्कूल में हुई। कक्षा आठ पास करने के बाद 12 किमी दूर श्रीनगर पैदल जाकर बारहवीं तक शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने देहरादून के डीएवी कालेज से स्नातक और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर किया। इसके बाद मुंबई चले गए। यहां चार्टर्ड एकाउंटेंट बिपिन शाह की मदद से सीए की परीक्षा पास की। बाद में मुंबई में प्रैक्टिस शुरू की। मोहन काला ने अपनी सफलता के कई पड़ाव गढ़े। मुंबई में ही उन्होंने अपना एक मेडिकल मैन्युफैक्चरिंग प्लांट स्थापित किया। अपने काम का विस्तार करते हुए उन्होंने देहरादून में दो मैन्युफैक्चरिंग यूनिट शुरू की। ये दोनों यूनिटें डब्ल्यूएचओ के मानकों के अनुरूप हैं। मोहन काला को देहरादून में उद्योग लगाकर इस बात का सुकून भी मिला कि वे अपनी मातृभूमि के लिये कुछ कर रहे हैं। 1987 से वह समाज की सेवा में लग गये। मुबंई में प्रवासी उत्तराखंडवासियों के सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उत्तराखंड में किसी भी व्यक्ति या संस्था को जब भी किसी तरह की मदद की जरूरत हुई तो मोहन काला खड़े मिले। पहाड़ में हर साल आने वाली आपदाओं के समय उन्होंने बहुत सारी राहत सामग्री भेजी। पिछले दो वर्ष से जिस करोना संकट से पूरा देश जूझ रहा है उसमें भी मोहन काला जी ने बढ़-चढ़कर लोगों की हर संभव सहायता की है। मोहन काला ने पिछले विधानसभा चुनाव-2017 में श्रीनगर विधानसभा सीट से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा। अपने गांव सुमाड़ी में उन्होंने पहली से पांचवीं कक्षा तक अंग्रेजी मांध्यम के स्कूल की स्थापना की। निःशुल्क शिक्षा देने वाले इस स्कूल को बाद में ग्राम कल्याण समिति को सौंप दिया गया। अपने गांव में 'बारात घर' में सामुदायिक हॉल बनाने के लिए 38 लाख रुपए दिए। कई स्कूल, कॉलेजों और अन्य संस्थाओं को लगभग 200 कंप्यूटर और 100 प्रिंटर उपलब्ध कराए। 2013 में केदारनाथ में आई आपदा से प्रभावित क्षेत्रों के लिए 25 लाख रुपए की दवाओं की व्यवस्था के साथ अपने माता-पिता को खोने वाले बच्चों के लिए 15 लाख की व्यवस्था की। ■

13

तारा चंद्र उप्रेती

ग्रुप प्रेसीडेंट, बजाज एवं फाउंडर डायरेक्टर, दीर्घायु हिमालयन ऑर्गेनिक्स, दिल्ली

तारा चंद्र उप्रेती बजाज समूह के ग्रुप प्रेसिडेंट हैं। साथ ही दीर्घायु हिमालयन आर्गेनिक के प्रमोटर हैं। दीर्घायु हिमालयन ऑर्गेनिक्स और दीर्घायु जीवन अमृत फाउंडेशन की स्थापना उन्होंने अपनी पत्नी रमा उप्रेती के साथ मिलकर की है। इसके अलावा उन्होंने कला एवं संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए इनक्रिडेबल आर्ट एंड कल्चर फाउंडेशन का भी गठन कर रखा है। उन्होंने उत्तराखंड प्रेम के प्रति समर्पण की भावना से रानीखेत के पास योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र की स्थापना की है। उत्तराखंड में किसानों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से आर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं। इनके माध्यम से नवयुवकों को योग-शिक्षा एवं जैविक खेती से जोड़ा जा रहा है। वह उत्तराखंड के ग्रामीण इलाकों में युवाओं को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध करा रहे हैं।

तारा चंद्र उप्रेती ने कोरोना के चलते लगाए गए लॉकडाउन के दौरान आजीविका खो चुके उत्तराखंड के सीमांत कलाकारों को ई-मंच प्रदान किया। तारा चंद्र उप्रेती का जन्म उत्तराखंड के सुदूर ग्राम खेती, ब्लाक धौलादेवी में हुआ। इंटर की परीक्षा राजकीय इंटर कॉलेज अल्मोड़ा और स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा प्रसिद्ध ठाकुर देव सिंह बिष्ट महाविद्यालय नैनीताल से भौतिकी में प्रथम स्थान और विश्वविद्यालय में अव्वल स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। वह पहले नैनीताल बैंक में अधिकारी पद पर नियुक्त हुए और सहायक महाप्रबंधक पद पर पहुंचे। नैनीताल बैंक में रहते हुए वहां के नौजवानों को स्वरोजगार के लिए ऋण उपलब्ध कराना, पहाड़ों में उद्योगों की स्थापना के लिए प्रोत्साहन देना, नैनीताल बैंक को पहाड़ों से निकालकर दिल्ली और उत्तर प्रदेश के शहरों में शाखा विस्तार कर मजबूती प्रदान करने में अतुलनीय योगदान दिया। उनके जीवन में सन् 1999 में महत्वपूर्ण मोड़ आया जब उन्हें बैंक से कॉपोरेट जगत में कदम रखने का मौका मिला।

उन्हें गुजरात से जुड़ी कंपनियों टोरेंटर फॉर्मा और टोरेंटर पॉवर का संयुक्त रूप से महाप्रबंधक नियुक्त किया गया, जिसमें उन्होंने नित नई ऊंचाइयां प्राप्त की। साल 2011 में काशीपुर स्थित 450 मेगावाट गैस आधारित पावर प्लांट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी बने, जो उत्तराखंड में गैस आधारित पहला पावर प्लांट था। ■

14

डा. के. एस. पंवार

पॉलिगन केमिकल्स, मुंबई

केमिकल इंडस्ट्री में ऊंचा मकाम हासिल करने वाले केएस पंवार उत्तराखंड में इंडस्ट्री लाने और रोजगार के अवसर पैदा करने वाले बिजनेसमैन में से एक गिने जाते हैं। महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, उत्तराखंड समेत देश के कई राज्यों में काम करने वाले केएस पंवार का केमिकल के विभिन्न सेक्टरों में काम करने का 27 साल का लंबा अनुभव है। उन्होंने अपने करियर की शुरूआत केमट्रीट इंडिया लिमिटेड में एक प्रोजेक्ट मैनेजर के तौर पर की थी। उन्होंने यहां केमिकल क्लीनिंग, शिप मेंटेनेंस केमिकल्स जैसी अनेक चीजों के बारे में अनुभव हासिल किया। हालांकि वह उद्यमी बनने का सपना देख रहे थे और उसके लिए मेहनत भी शुरू कर दी थी। आखिरकार उन्होंने 1999 में प्राइवेट लिमिटेड की नींव रखी और इन 20 साल में उन्होंने केमिकल से जुड़े कई असाइनमेंट का कुशलता से नेतृत्व किया। आज वह पॉलिगन केमिकल्स के प्रबंध निदेशक हैं, जो करड 9001:2008 कंपनी है और सिविल कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री को तमाम चीजें उपलब्ध कराती है। मुंबई में हेड ऑफिस के साथ इसका दफ्तर गुजरात, दिल्ली और देहरादून में भी है। दो प्लांट मुंबई और देहरादून में स्थापित हैं। 11 साल पहले उन्होंने देहरादून में मिनरल वाटर तैयार करने की फैक्ट्री शुरू की, जो एच2ओ ब्रांड से काफी मशहूर हो चुकी है। इसके अलावा वह पॉलिइन्फ्रा टेक्नॉलोजीज के डायरेक्टर और सोशल ग्रुप ऑफ कंपनीज के चेयरमैन भी हैं। सोशल ग्रुप सौर ऊर्जा, फाइनेंस समेत विभिन्न क्षेत्रों में काम करता है। डा. पंवार ने 2017 में फ्रांस से केमिकल इंजीनियरिंग में अपनी पीएचडी पूरी की। इससे पहले वह श्रीलंका से 2014 में डॉक्टर ऑफ ऑनर्स (इंडस्ट्री) की डिग्री हासिल कर चुके थे। भारतीय उद्योग रतन अवॉर्ड, भारतीय निर्माण रतन अवॉर्ड समेत एक दर्जन से ज्यादा पुरस्कार पाने वाले केएस पंवार सामाजिक गतिविधियों में भी लगे हुए हैं। डा. पंवार को कृषि और इंडस्ट्री सेक्टर की बारीकियों का मास्टर माना जाता है। वह जानते थे कि उत्तराखंड में उद्योग का ढांचा तभी खड़ा हो सकता है, जब यहां बड़े पैमाने पर निवेश हो। यही वजह है कि उनकी सलाह पर राज्य में साल 2018 में इनवेस्टर समिट हुआ। इस समिट के बाद लगभग दो लाख करोड़ रुपये के एमओयू साइन हुए। ■

15

जगदीश भट्ट

संस्थापक, फेडयूके फेडरेशन, देहरादून

जगदीश भट्ट आईटी उद्योग में एक दूरदर्शी, प्रेरणास्रोत और अनुभवी लीडर के तौर पर जाने जाते हैं। टेक्नो-कमर्शियल प्रोफेशनल के तौर पर जगदीश के पास लीडरशिप और मैनेजमेंट कंसल्टिंग में दो दशक से ज्यादा का अनुभव है। वह ऊजावान स्व-प्रेरित शख्स हैं जिन्होंने रेवेन्यू के साथ-साथ क्लाइंट बेस बढ़ाने में मास्टरी हासिल की है। कॉर्पोरेट रणनीतियों, अंतरराष्ट्रीय बाजार विस्तार, साझेदारी, टीम लीडरशिप और जन प्रबंधन के क्षेत्र में उनका एक मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड रहा है। नेटवर्क और सुरक्षा में डिप्लोमा के साथ ही उन्होंने एमबीए भी किया है। वह कई कार्यकारी कार्यक्रमों, सम्मेलनों और इवेंट्स में शामिल हो चुके हैं जिसमें विभिन्न भागीदारों की ओर से आयोजित लीडरशिप प्रोग्राम शामिल है। अपने पेशेवर करियर में उन्होंने कई रणनीतिक साझेदारियां की। सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार के क्षेत्र में उनके पास व्यापक अनुभव है। वह एक स्किल्ड ऑपरेशनल स्ट्रैटिजिस्ट हैं। वह दक्षता, लागत नियंत्रण और लाभ में सुधार के लिए प्रक्रियाओं और संरचना प्रणालियों को व्यवस्थित करने में माहिर हैं। उन्होंने सिंगापुर में 2017 में न्यूजेन आईटी की स्थापना की और इसे ऑस्ट्रेलिया, हांगकांग, यूएई, भारत में सफलतापूर्वक विस्तार किया। हाल ही में यूरोपीय बाजार को लक्षित करने के लिए हाल ही में अमेरिका और यूके तक पहुंच बनाने की पहल हुई। जगदीश प्रतिस्पर्धा में विश्वास नहीं करते बल्कि चाहते हैं कि उनके प्रतिस्पर्धी न्यूजेन आईटी के साथ स्पर्धा करें। उनका मानना है कि ग्राहक हमारे अस्तित्व की वजह है और वे उस भरोसे का बहुत सम्मान करते हैं जो वे हम पर करते हैं और व्यावसायिक कार्यप्रणाली के सभी पहलुओं में रचनात्मकता, नवाचार, अखंडता और व्यावसायिक नैतिकता के माध्यम से विकसित होते हैं। उनका मिशन ग्राहकों के साथ दीर्घकालिक संबंध बनाना है। जगदीश के दो बच्चे हैं। उन्हें क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी खेलने का शौक है। वह सक्रिय रूप से उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों और अन्य राज्यों में सामाजिक सेवाएं कर रहे हैं। स्माइल फाउंडेशन, उत्तराखंड जन विकास सहकारी समिति जैसे सामाजिक संगठनों से जुड़े हैं और अपनी मां के नाम से बने स्वर्गीय जीवंती देवी भट्ट मेमोरियल ट्रस्ट चलाते हैं। जगदीश भट्ट ने उत्तराखंड-फेडयूके फेडरेशन का गठन किया है जिसका उद्देश्य यह है कि उद्यमी ही उद्यमी की मदद करें। उत्तराखंड के उद्यमियों द्वारा इसकी स्थापना 2021 में की गई थी। फेडयूके का लक्ष्य 5000 से अधिक उत्तराखंड उद्यमियों को अपने साथ जोड़ना है। इसका मुख्यालय उत्तराखंड में और क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली में है। फेडयूके का उद्देश्य उत्तराखंड समेत पूरे भारत और वैश्विक स्तर पर उद्यमियों का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रभावशाली संगठन बनना है। ■

16

बीएस रावत

चेयरमैन, रावत एजुकेशनल ग्रुप, जयपुर

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का सूत्र निरंतर प्रयास और लगन होती है। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बनते हैं। रावत एजुकेशनल ग्रुप के संस्थापक बीएस रावत उन खास व्यक्तित्वों में से हैं जो शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। बीएस रावत का जन्म ग्राम चैली, जिला पौड़ी गढवाल, उत्तराखंड में हुआ। इंडिया टुडे ग्रुप द्वारा भी उन्हें लुमिनारिस ऑफ राजस्थान अवार्ड द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। वहां युवा सांस्कृतिक राजस्थान युवा छात्र संस्थान द्वारा विवेकानंद अवार्ड से सम्मानित हैं।

रावत ग्रुप की स्थापना 1983 इसके चेयरमैन बीएस रावत द्वारा की गई और रावत बाल निकेतन के रूप में हुई एक शुरूआत आज एक विशाल ग्रुप के रूप में परिवर्तित हो चुकी है। सीबीएसई हो या आरबीएसई हर दिशा में रावत ग्रुप के विद्यालय अपनी शैक्षिक और सहशैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्टता सिद्ध कर चुके हैं शिक्षा के क्षेत्र में गत 39 वर्षों से रावत ग्रुप का परचम पूरे राजस्थान में फहरा रहा है। ये उनका ही प्रयास है कि 5 विद्याथियों से प्रारंभ हुआ ग्रुप 15000 से अधिक विद्याथीयों के बड़े ग्रुप के रूप में पल्लवित हो चुका है। स्कूल शिक्षा हो या उच्च शिक्षा हर ओर रावत ग्रुप के CBSE और RBSE स्कूल और कॉलेज एक नई पहचान बनाए हुए हैं। उच्च शिक्षा में भी रावत एजुकेशनल ग्रुप ने सफलता की ऊंचाइयों को छुआ है, रावत पी.जी. गर्ल्स कॉलेज, रावत बी.एड और बीएसटीसी कॉलेज, रावत नर्सिंग और पोस्ट बेसिक नर्सिंग कॉलेज उच्च और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में मील के पत्थर हैं।

बीएस रावत का जन्म उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल के ग्राम चैली में हुआ। पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, अशोक गहलोत द्वारा उन्हें समय-समय पर सम्मानित किया जा चुका है। वह राष्ट्रीय उत्तराखंड सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हैं। उत्तराखंड की गौरवशाली परंपरा, संस्कृति के संरक्षण के लिए निरंतर प्रयासरत और समाज कल्याण कार्यक्रमो में अपने सक्रिय सहयोग के लिए सदैव जागरूक रहते हैं। रावत क्रिकेट ग्राउंड, भांकरोटा और निर्मला ऑडिटोरियम ग्रुप की शान को बढ़ा रहे हैं। बीएस रावत स्वय को एक जमीन से जुड़ी शख्सियत मानते है और सदैव जनकल्याण कार्यो में संलग्न रहने के लिए कृत संकल्प हैं। उनका यह सरल व्यक्तित्व ही उनकी सफलता का पर्याय है। ■

17

देव रतूड़ी

उत्तराखंड होटल मैनेजमेंट कंपनी, चीन

चीन में भारतीय संस्कृति की थीम पर रेस्तरां चेन चलाने वाले कामयाब उद्यमियों में देव रतूड़ी की गिनती होती है। वह उत्तराखंड के टिहरी से हैं और चीन के नामी उद्यमी और अभिनेता के रूप में उनकी गिनती होती है। देव रतूड़ी चीन के शानक्सी प्रांत में 'यूएचएम' उत्तराखंड होटल मैनेजमेंट कंपनी के संस्थापक हैं, जिसके तहत रेडफोर्ट, एम्बर पैलेस और चीनी हॉट पॉट रेस्तरां 'शांक्सी सोल' - फिश वैली जैसे भारतीय सांस्कृतिक थीम आधारित रेस्तरां आते हैं।

यूएसएम शानक्सी प्रांत के ज़िक्सियन में सबसे बड़े भारतीय पैवेलियन में से एक खोलने के लिए शीआन सरकार और शानक्सी पर्यटन के साथ काम कर रहा है, जिसमें भारतीय थीम वाला होटल, योग स्कूल, भारतीय हस्तशिल्प और आयुर्वेद उत्पाद, गिफ्ट शॉप, भारतीय स्ट्रीट फूड, आयुर्वेद स्पा और भारतीय संग्रहालय हों, साथ ही थीम आधारित रेस्तरां भी हो। यह भी भारत-चीन संबंधों को मजबूत करने का एक बड़ा अवसर और नया कदम है। कई साल चीन में रहते हुए देव रतूड़ी ने मंदारिन (चीनी भाषा) सीखी। उन्हें चीनी संस्कृति और परंपराओं की अच्छी समझ है, वह धाराप्रवाह मंदारिन बोलते हैं। चीन में एक सफल व्यवसायी होने के अलावा देव ने कई चीनी फिल्मों और टीवी श्रृंखलाओं में भी अभिनय किया है। देव विभिन्न तरीकों से योगदान देकर समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की इच्छा रखने वाले उद्यमी हैं। वह दो महानतम सभ्यताओं के बीच संबंधों को बढ़ाने के लिए चीन में विभिन्न सांस्कृतिक आदान-प्रदान गतिविधियों में शामिल रहे हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान में उनके योगदान के चलते स्थानीय चीनी मीडिया उन्हें 'सिल्क रोड एंबेसडर'कहती हैं। एम्बर पैलेस को ट्रिपएडवाइज़र में नंबर 1 भारतीय रेस्तरां और चीन के शीर्ष रेस्तरां में से एक आंका गया है।

सीईओ-इनसाइट पत्रिका द्वारा 2022 के लिए चीन के शीर्ष 10 भारतीय कारोबारियों में देव रतूड़ी को जगह दी है। इससे पहले 2015-2016 में शानक्सी में शीर्ष 100 उद्यमी के तौर पर देव रतूड़ी को शामिल किया गया था। देव रतूड़ी को टीवी नाटक 'माई रूममेट इज डिटेक्टिव' के लिए पर्सन ऑफ द ईयर अवार्ड और बेस्ट रिवर्सल अवार्ड मिल चुका है। वह हांगकांग अंतर्राष्ट्रीय पाक कला संघ के सदस्य हैं। इसके साथ ही चीन खाद्य संस्कृति अनुसंधान संघ द्वारा सम्मानित अंतर्राष्ट्रीय खाद्य सलाहकार भी हैं। उनकी जीवन की यात्रा को जियान में 7वीं कक्षा की अंग्रेजी की किताब में जगह दी गई है। ■

18

ध्रुव जोशी

सीईओ, क्लाउड फिजिशियन, बेंगलुरु

ध्रुव जोशी क्लाउडफिजिशियन के सह-संस्थापक और सीईओ हैं। यह एक हेल्थकेयर कंपनी है जो उन अस्पतालों को दूरस्थ रूप से आईसीयू विशेषज्ञता प्रदान करती है जिनके पास आईसीयू विशेषज्ञ डॉक्टर नहीं हैं। क्लाउड फिजिशियन के समाधान डॉक्टरों के लिए तैयार किए गए हैं। कंपनी का अत्याधुनिक प्लेटफॉर्म रेडार (RADAR) आईसीयू को अपने केयर सेंटर से जोड़ता है जो उच्च प्रशिक्षित और योग्य क्रिटिकल केयर सुपर-स्पेशलिस्ट डॉक्टरों, नर्सों, आहार विशेषज्ञों और फामाकोलॉजिस्टों की एक टीम साथ रखता है। यह क्लिनिकल टीम कई क्षेत्रों में गंभीर रूप से बीमार रोगियों की देखभाल के प्रबंधन के लिए अस्पताल के आईसीयू से जुड़ने का लिए रेडार का इस्तेमाल करती है। तकनीकी एक्सपर्ट की टीम द्वारा तैयार किए रेडार में ऑटोमेशन, कंप्यूटर विजन, रीयल-टाइम वीडियो और डेटा एनालिटिक्स शामिल है। इसके जरिए एक्सपर्ट मरीजों से सीधए जुड़ते हैं और उनके चिकित्सा प्रदान करने में मदद करते हैं। क्लाउड फिजिशियन की कोशिश रहती है कि मरीज को उसके बिस्तर तक क्लिनिकल टीम का मार्गदर्शन हर दिन, हर घंटे, हर मिनट मिल सके। ध्रुव जोशी कहते हैं कि उन्हें अपने करियर की शुरूआत में ही एहसास हो गया था कि देखभाल की गुणवत्ता बढ़ाने और परिणाम में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी एक शक्तिशाली माध्यम हो सकता है। सीईओ की भूमिका में ध्रुव सेल्स, ग्रोथ, हायरिंग, विस्तार और कंपनी के रणनीतिक कार्यों का प्रबंधन देखते हैं। ध्रुव की कोशिश है कि गुणवत्तापूर्ण देखभाल में सुधार बहुत जरूरी है। उन्हें दुनियाभर में हेल्थकेयर टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्म के साथ व्यापक अनुभव है और पूरे अमेरिका, भारत में 10,000 घंटे से ज्यादा रिमोट क्रिटिकल केयर प्रदान किया जा चुका है। प्रौद्योगिकी सक्षम स्वास्थ्य सेवा वितरण में अग्रणी के रूप में ध्रुव भारत और अमेरिका में कई मंचों पर वक्ता के तौर पर आमंत्रित किए जाते हैं। ध्रुव ने क्लीवलैंड क्लिनिक फाउंडेशन, अमेरिका में पल्मोनरी और क्रिटिकल केयर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने सेंट जॉन्स मेडिकल कॉलेज, बेंगलुरु से मेडिकल की पढ़ाई की और अमेरिका के एक प्रतिष्ठित संस्थान से इंटरनल मेडिसिन ट्रेनिंग पूरी की। वह जाने माने डॉक्टर उद्यमी डॉ. दीपक जोशी के बेटे हैं। परिवार मूल रूप से अल्मोड़ा का रहने वाला है लेकिन अब बेंगलुरु में बस गए हैं। उन्होंने अपनी मेडिकल प्रैक्टिस के साथ आतिथ्य से लेकर दवा और कॉस्मेटिक्स तक कई बिजनस खड़ा किया है। क्लाउड फिजिशियन अब तक भारत में 16 राज्यों के लगभग 40 हजार से ज्यादा आईसीयू मरीजों को क्रिटिकल केयर उपलब्ध करा सका है और कई लोगों की जान बचाई गई। ■

19

विनोद बछेती

चेयरमैन, डीपीएमआई, दिल्ली

विनोद बछेती उत्तराखंड के उन चुनिंदा लोगों में शामिल हैं, जिन्होंने व्यावसायिक सफलता के साथ-साथ उत्तराखंड की संस्कृति के विकास एवं संवर्धन के लिए निरंतर काम किया है। 24 सितंबर 1996 को दिल्ली में दो कमरों से दिल्ली पैरामेडिकल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट यानी डीपीएमआई संस्थान की शुरुआत की। स्वास्थ्य तकनीकी के क्षेत्र लैब टेक्नीशियन, ओटी टेक्नीशियन, नर्सिंग अस्सिटेंट, एक्स-रे टेक्नीशियन और होटल मैनेजमेंट जैसे कोर्स शुरू किए। जिसको बच्चे दसवीं-बारहवी कर आसानी से कर सकते हैं। आज देश भर में डीपीएमआई नाम से लगभग 72 संस्थान 18 राज्यों में चल रहे है। जिनसे शिक्षित होकर देश ही नहीं बल्कि विदेशों के छात्र कई बड़े अस्पतालों में टेक्नीशियन सहायक के तौर पर काम कर रहे हैं। जिनमें देश के बड़े, छोटे अस्पताल और नर्सिंग होम जैस दिल्ली का एम्स, वेदांता, एस्कॉर्ट और फोर्टिज एवं मैक्स अस्पताल प्रमुख है। संस्था में कई बच्चे ऐसे भी हैं, जो पढ़ाई के लिए फीस जमा नहीं कर पाते लेकिन डीपीएमआई इन छात्रों को बहुत ही मामूली फीस पर शिक्षित कर रहा है। डा. बछेती नई पीढ़ी को शिक्षित करने के साथ-साथ सामजसेवा के क्षेत्र में भी काम कर रहे हैं। उत्तराखंड लोक भाषा साहित्य मंच दिल्ली', 'उत्तराखण्ड एकता मंच', 'डीपीएमआई' एवं 'हिमालयन न्यूज' के सहयोग से सन् 2016 में गढ़वाली-कुमाऊंनी भाषा-बोली सिखाने के अभियान की शुरुआत की। इस अभियान के तहत तमाम सामाजिक कार्यकर्ता और लेखक-पत्रकार प्रत्येक रविवार को सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक बच्चों को उत्तराखंडी बोली-भाषा सीखाने में अहम भूमिका निभाते हैं। वह न्यूज वेब चैनल हिमालयन न्यूज के निदेशक है। हिमालयन न्यूज के मध्यम से आप सिर्फ खबरें ही नहीं दिखाते हैं। बल्कि आपने कई लोगों को इस मंच से रोजगार के अवसर भी उपलब्ध करवाए है। इसके साथ ही विनोद बछेती नेशनल स्किल डेवलपमेंट कारपोरेशन (एनएसडीसी) भारत सरकार के साथ एसोसिएट पार्टनर के रूप में जुड़े हैं। उत्तराखंड की लोक थाती नरेंद्र सिंह नेगी, स्व. हीरा सिंह राणा जैसे कई कलाकारों के समय-समय पर सम्मान के साथ ही नरेंद्र सिंह नेगी एवं हीरा सिहं राणा के जीवन पर पुस्तक का प्रकाशन किया। हर वर्ष महाकवि कन्हैया लाल डंडरियाल साहित्य सम्मान कला, संस्कृति एवं समाजसेवा के लिए सम्मान पिछले 8 वर्षों से प्रदान कर रहे हैं। ■

20

विनोद पांडे

संस्थापक, पीएमएस कंसलटिंग, दिल्ली

वह साल था 1997 और 23 साल का एक नौजवान पीएमएस कंसलटिंग फर्म की नींव रखता है। उम्र भले ही छोटी थी पर इस जोशीले युवक ने अपने बिजनस को ऊंचाई पर ले जाने के लिए पूरी ऊर्जा लगा दी। आज यह एक प्रमुख भर्ती और एक्जीक्यूटिव सर्च फर्म बन चुकी है। उन्हें 2013 के राजीव गांधी उत्कृष्टता पुरस्कार से भी नवाजा गया है। उनके पेशेवराना कौशल का ही नतीजा है कि उन्हें फिलिप्स इंडिया, कोटक ग्रुप, डीएलएफ, टाटा एआईजी, आईसीआईसीआई जैसे क्लाइंटों से विभिन्न पुरस्कार और प्रशंसा मिल चुकी है।

रसायन विज्ञान में एमएससी के बाद एमबीए की पढ़ाई करने वाले विनोद पांडे ने इंडस्ट्रियल रिलेशंस में पीजी डिप्लोमा भी किया। उन्हें विभिन्न संस्थानों के लिए अलग-अलग भूमिका में सेवा देने का मौका मिला। टोस्टमास्टर इंटरनेशनल के एरिया गवर्नर, टोस्टमास्टर क्लब नई दिल्ली के अध्यक्ष, दिल्ली एडवांस टोस्टमास्टर के सचिव, नेशनल एचआरडी नेटवर्क-एनसीआर चैप्टर की कोर कमेटी का हिस्सा रहे। टीएमआई अमेरिका ने विनोद पांडे को एक निपुण कम्युनिकेटर और लीडर के रूप में मान्यता दी है। 2017 में उन्होंने मोहिनी पांडे मेमोरियल इंस्पिरेशनल स्पीच प्रतियोगिता नाम से भारत में पब्लिक स्पीकिंग स्पर्धा की शुरूआत की।

नेशनल एचआरडी नेटवर्क के लिए कई सम्मेलन, यूथ लीडरशिप प्रोग्राम और कई स्किल बिल्डिंग सेमिनार आयोजित किया। उन्हें तीन बार फिलिप्स इंडिया, तीन बार कोटक, डीएलएफ, आईसीआईसीआई, टाटा एआईजी से बेस्ट रिक्रूटमेंट अवॉर्ड दिया गया है।

कारोबार को बढ़ाने के साथ-साथ वह पीएमएस कंसलटिंग के लाभ का 5 प्रतिशत सामाजिक कार्यों के लिए दान करते हैं। यह पैसा ग्लोबल फाउंडेशन फॉर 'मन एक्सीलेंस को जाता है, जो स्किल बिल्डिंग के क्षेत्र में काम करने वाला ट्रस्ट है। ■

21

वीरेंद्र रावत

संस्थापक, ग्रीन स्कूल यूनिवर्सिटी, गुजरात

ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा बढ़ रहा है और इससे बचने लिए धरती के हर शख्स की अपनी एक जिम्मेदारी बनती है। इसी सोच के साथ वीरेंद्र रावत ने ग्रीन स्कूल और ग्रीन यूनिवर्सिटी का कॉन्सेप्ट लेकर आए। इसके अंतर्गत पूरी जिम्मेदारी के साथ शिक्षा के माध्यम से छात्रों और धरती के प्रति अपनी भूमिक को स्वीकार स्वीकार किया जाता है। उन्होंने शिक्षा पर हार्वर्ड विश्वविद्यालय और संयुक्त राष्ट्र को भी संबोधित किया है। वह हार्वर्ड विश्वविद्यालय के हार्वर्ड एक्सटेंशन पर्यावरण क्लब के सदस्य भी हैं। परमाणु हथियारों के पूर्ण उन्मूलन के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस के मौके पर संयुक्त राष्ट्र महासभा की उच्चस्तरीय बैठक के लिए उन्हें 2017, 18, 19 में पर्यवेक्षक के तौर पर आमंत्रित किया गया था। वह क्लाइमेंट रियलिटी लीडरशिप कॉर्प्स के मेंटर है, जिसका नेतृत्व अमेरिका के पूर्व उप राष्ट्रपति अल गोर करते हैं। वीरेंद्र रावत नीति आयोग, भारत सरकार की स्टेम पहल- अटल टिंकरिंग लैब के भी सदस्य हैं। उन्हें अद्वैत फाउंडेशन स्कूल लीडरशिप अवॉर्ड मिल चुका है। 2019 का यूएनजीए कॉन्फ्रेंस अवॉर्ड भी मिला है। पर्यावरण के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए उन्हें मैसाचुसेट्स प्रतिनिधि सभा के स्पीकर द्वारा ग्रीन डिफरेंस अवॉर्ड 2016 दिया गया है। वीरेंद्र ने आईआईटी बॉम्बे टेकफेस्ट 2015 और गुजरात सरकार के ग्रीन स्कूल प्रोजेक्ट में अहम भूमिका निभाई। भारतीय छात्रों के लिए एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा ऑनलाइन चलाए जा रहे यूएस हाई स्कूल डिप्लोमा के नेशनल कोऑर्डिनेटर हैं। वह नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के कई राज्यों के क्षेत्रीय समन्वयक हैं। रावत शिक्षा से संबबद्ध एक गैर सरकारी संस्था ग्रीन मेंटर के संस्थापक निदेशक हैं। ग्रीन मेंटर्स संयुक्त राष्ट्र ग्लोबल इनोवेशन एक्सचेंज में भी सूचीबद्ध है। उन्होंने एशिया, अमेरिका और अफ्रीका में 1000 से अधिक पारंपरिक स्कूलों और विश्वविद्यालयों को ग्रीन स्कूलों और ग्रीन यूनिवर्सिटी में बदलने में अहम भूमिका निभाई है। वह इंडो अमेरिकन ग्रीन यूनिवर्सिटी नेटवर्क के संस्थापक है।

वीरेंद्र रावत टेहरी गढ़वाल के, प्रतापनगर तहसील के हेरवाल गांव के मूल निवासी है, वर्ष 1994 से गुजरात के अहमदाबाद में कार्यरत है। इनके पिता इतने गरीब थे कि कक्षा 9 में प्रवेश दिलाने के लिए भी उन्होंने 200 रुपए कर्ज लिए थे। आज वीरेंद्र रावत विश्व के 40 से ज्यादा देशो की शिक्षा व्यवस्था में सुधार ला रहे है, उनको जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से बचाने में लगे है, वीरेंद्र रावत अनेक देशो को सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में उनकी मदद कर रहे है। ■

22

बहादुर सिंह मेहरा

कलरडिजाइन इंडिया, द्वाराहाट

अल्मोडा के नट्टागुल्ली तहसील द्वाराहाट में 1975 में जन्मे बीएस मेहरा पांच भाई-बहनों में सबसे छोटे हैं। प्राथमिक शिक्षा गांव में लेने के बाद दिल्ली में एनडीएमसी में कार्यरत अपने पिता के पास जाकर आगे की शिक्षा ली। श्रीवेंकटेश्वर कालेज से फिजिक्स ऑनर्स करने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से एमसीए किया। फिर एईईएस एडवांस इलेक्ट्रॉनिक्स में तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रिसर्च एवं डेवलपमेंट के क्षेत्र में लग गए। भारत में पहली बार पीडब्ल्यूएम यानी पल्स विद मॉड्यूलेशन पर आधारित तकनीक का इस्तेमाल करते हुए 1999 में पहला माइक्रोकंट्रोलर आधारित कलर कंट्रोलर बनाया। इसके साथ ही कलर डिजाइन इंडिया कंपनी की शुरूआत की। यह कंपनी आज भारत की चुनिंदा कम्पनियों में से एक है जो एलईडी लाइट्स, वॉटरशो, स्मार्टसिटी ब्यूटीफिकेशन प्रोजेक्ट्स में देश-विदेश में काम कर रही है।

कंपनी की एक सोलर की यूनिट इंडिया सोलर सॉल्यूशन मिनी इंडस्ट्रियल एरिया- द्वाराहाट में स्थापित है, जिसमें वहीं के निवासियों को प्रशिक्षित कर रोजगार प्रदान किया है। एक और कंपनी कुमाऊं ईको द्वाराहाट में एक विश्वस्तरीय वेलनेस होम एंड रिसोर्ट का निर्माण कर रही है, जिससे वहां पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके। बीएस मेहरा खेल के क्षेत्र में काफी सक्रिय हैं और दिल्ली युनाइटेड फुटबॉल क्लब के संस्थापक और चैयरमेन रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में क्लब दिल्ली के सबसे कामयाब क्लबों में से एक था। वर्तमान में वो दिल्ली फुटबॉल क्लब के सह-मालिक है। यह फुटबाल क्लब एक ही साल यानी 2021 में तीन राजकीय व राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं जीतने वाला एकमात्र भारतीय फुटबाल क्लब है। बीएस मेहरा खुद भी साल 2020-21 में वेटरन फुटबॉल में राष्ट्रीय चैंपियन टीम दिल्ली लीजेंड यूनाइटेड के कप्तान रहे हैं।

वह जल्द ही द्वाराहाट में एक विश्वस्तरीय रेसीडेंशियल स्पोर्ट्स एकेडमी की शुरूआत करने जा रहे हैं। 47 एकड़ में फैली यह एकेडमी पहाड़ के युवाओं को खेल में भविष्य तराशने में सहायक रहेगी। ■

23

ललित पंत

संस्थापक, कोजोडॉटइन, देहरादून

ललित पंत एक सॉफ्टवेयर आर्किटेक्ट, लेखक और शिक्षक हैं। वह देहरादून में रहते हैं। उनका ज्यादातर समय एड-टेक स्पेस में सॉफ्टवेयर और किताबें लिखने और स्कूली बच्चों को कोडिंग (और कोडिंग के माध्यम से कई अन्य मूलभूत कौशल) सिखाने में बीतता है। वह कोजिक्स फाउंडेशन (देहरादून) के संस्थापक और प्रबंध न्यासी हैं, जो एक गैर सरकारी संगठन हैं। यह शिक्षा/कोडिंग क्षेत्र में वंचित बच्चों के साथ काम करता है। इससे पहले ललित ने कई वर्षों तक एक पेशेवर प्रोग्रामर के रूप में काम किया। वह संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप और भारत में कंपनियों के लिए सॉफ्टवेयर डिजाइन विकसित करने के काम से संबंधित रहे।

उन्होंने जूनियर प्रोग्रामर से लेकर सीटीओ तक सभी भूमिकाओं को शानदार तरीके से निभाया। जिन कुछ कंपनियों के लिए उन्होंने काम किया उनमें टीसीएस, स्टर्लिंग कॉमर्स (एटी एंड टी और फिर आईबीएम की सहायक कंपनी) और कुछ स्टार्टअप (सह-संस्थापक के रूप में) शामिल हैं। ललित का जन्म उत्तराखंड के मसूरी में हुआ। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा लॉ मार्टिनियर, लखनऊ से की। उन्होंने आईआईटी कानपुर से अंडरग्रेजुएट और फिर आईआईटी दिल्ली से पोस्टग्रेजुएट किया। वह कई वर्षों तक दुनिया भर के कई शहरों (जैसे कोपेनहेगन, पिट्सबर्ग, डलास) में रहे। वह इस समय देहरादून में अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ रहते हैं। उन्होंने डॉ. डॉब्स जर्नल और जावा रिपोर्ट जैसी लोकप्रिय प्रोग्रामिंग पत्रिकाओं (1990 के दशक के अंत में) के लिए लेख लिखे हैं। उनके पास कई पेटेंट भी हैं। ललित कोजो लर्निंग एनवायरनमेंट (www.kojo.in) के निमार्ता और प्रमुख डेवलपर हैं, जो एक ओपन-सोर्स कोडिंग ऐप है। इसे दुनिया भर में उपयोग किया जाता है (कोजो के बड़े अंतरराष्ट्रीय उपयोगकर्ताओं में से एक ल्यूंड यूनिवर्सिटी, स्वीडन है)।

कोजो का भारत में भी बड़े पैमाने पर उपयोग शुरू हो रहा है - यह अब कक्षा 7 और 8 के लिए गोवा राज्य कोडिंग पाठ्यक्रम का हिस्सा है। तिमली ट्रस्ट, ऋचा और स्मार्टगांव जैसे कई सहयोगी गैर सरकारी संगठनों द्वारा पूरे भारत में कई परियोजनाओं में इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। इन्हीं परियोजनाओं में से एक कोजो-कल्पना परियोजना है, जो वर्तमान में उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार में चल रही है। ■

24

माधवानंद भट्ट

संस्थापक, अनमोल डेवलपर्स, मुंबई

पिथौरागढ़ में जन्मे माधवानंद भट्ट सामाजिक कार्यकर्ता और उद्यमी हैं। वह पिछले 58 वर्षों से मुंबई में रह रहे हैं। उन्होंने मुंबई से अपनी स्कूली और ग्रैजुएशन की पढ़ाई की। वह सामाजिक कार्यों में गहराई से जुड़े हैं। सरकार से मान्यता प्राप्त शैक्षिक संस्थान श्री गणेश विद्या मंदिर एवं जूनियर कॉलेज में ट्रस्टी हैं। उत्तरांचल मित्र मंडल वसई, बद्रीनाथ मंदिर मानव समाज कल्याण केंद्र के ट्रस्टी सह अध्यक्ष हैं। यह चैरिटेबल ट्रस्ट पढ़ाई-लिखाई, सांस्कृतिक गतिविधियों, चिकित्सा और वित्तीय सहायता के लिए जरूरतमंद व्यक्तियों को सहायता प्रदान करता है। वह पुरंदर स्नेह सामाजिक कल्याण संस्था नवी मुंबई के सलाहकार है। बुजुर्गों की सहायता के लिए डे केयर सेंटर चलाने में मदद करते हैं। वंचित समुदाय के बच्चों के लिए चलने वाले आनंद ग्राम आवासीय शैक्षिक संस्थान और मार्गदर्शन केंद्र गोपालवाड़ी उस्मानाबाद के सलाहकार हैं। इसके अलावा माधवानंद भट्ट 20 अलग-अलग समितियों, संघों, ट्रस्ट मित्र मंडल आदि से जुड़े हैं। एक बच्ची की शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता और एक लड़के की पढ़ाई का खर्च देने के लिए उन्हें काफी प्रशंसा और धन्यवाद पत्र मिल चुका है। पेशेवर सफर की बात करें तो माधवानंद ने अपने करियर की शुरूआत इंडियन ओवरसीज बैंक के साथ की। यह उनके करियर का पहला चरण था जिसमें उन्होंने जीवन के महत्वपूर्ण 20 साल लगाए। मुंबई की कई शाखाओं में उन्होंने विभिन्न पदों पर महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं।

एक सामाजिक व्यक्ति, समर्पित लीडर, मानवतावादी, जिम्मेदार और परोपकारी गुणों से युक्त माधवानंद भट्ट ने बैंकिंग क्षेत्र की नौकरी करते हुए 1998 में नया प्लान बनाया। बैंकिंग जॉब जारी रखते हुए उन्होंने रिएल एस्टेट क्षेत्र में बनने वाली बड़ी संभावनाओं को पहचान लिया। मार्केट पर गहरी पकड़ होने के कारण उन्होंने अपने आइडिया को हकीकत में उतारा और नवी मुंबई में 'अनमोल डेवलपर्स' नाम से एक कंपनी बनाई और निर्माण क्षेत्र में उतर गए। आज अनमोल डेवलपर्स ने 2000 से अधिक यूनिट तैयार कर चुका है और इसने नवी मुंबई में कई लोगों के घर के सपने को पूरा किया है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी पत्नी मीनाक्षी भट्ट के साथ एक मीडिया प्रोडक्शन हाउस श्री अनमोल प्रोडक्शन की नींव रखी। माधवानंद भट्ट ने महाराष्ट्र और उत्तराखंड के कई गरीब परिवारों को वित्तीय सहायता दी है। उन्होंने शिक्षा और खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हुए वित्तीय मदद दी। क्रिकेट से उनका विशेष लगाव है। क्रिकेट के क्षेत्र में युवाओं की नई पीढ़ी तैयार करने और उनकी बेहतरी के लिए हर साल मुंबई और नवी मुंबई में उत्तराखंड प्रीमियर लीग (यूपीएल) और उत्तराखंड चैलेंजर कप (यूसीसी) आयोजित किया जाता है। ■

25

अश्विनी शर्मा

संस्थापक, नेचर बेस्टो, देहरादून

देवभूमि के लोग एक ही ढर्रे पर चलने के आदी नहीं है। वे न सिर्फ अपने रोजगार और नौकरी को मन से करते हैं बल्कि आम लोगों की मदद के लिए भी सोचते रहते हैं। देहरादून में रहने वाले अश्विनी शर्मा औद्योगिक रसायन क्षेत्र में काम कर रहे हैं। उद्योग में कच्चे माल के रूप में अपशिष्ट रसायन का इस्तेमाल किया जाता है और इससे प्रदूषण को रोका जा सकता है। इनका दूसरा काम उत्तराखंड के सुदूर क्षेत्र में कृषि और बागवानी के क्षेत्र से जुड़ा है। यहां से वह शिमला मिर्च और बटन मशरूम उगाते हैं।

वह बताते हैं कि इस क्षेत्र में बहुत सारे रोजगार के अवसर सृजित होते हैं और उन लोगों को काम मिलता है जिनके पास आय का स्रोत नहीं होता है। इसे वह आशीर्वाद के तौर पर स्वीकार करते हैं। फिलहाल वह अलग-अलग सब्जियों और फलों की शेल्फ लाइफ बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि नुकसान न्यूनतम हो। अश्विनी ने अपने करियर की शुरूआत सहारनपुर, यूपी स्थित स्टार पेपर मिल्स लिमिटेड में रिसर्च केमिस्ट के तौर पर की। यहां उन्होंने 14 साल तक काम किया और बड़ी मात्रा में पेपर्स का प्रोडक्शन किया। स्मॉल स्केल पेपर इंडस्ट्री को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने मुजफ्फरनगर, यूपी में नई शुरूआत की। उन्होंने वहां दो मिले स्थापित कीं, जो 100 प्रतिशत दक्षता के साथ काम कर रही हैं। एक किरतपुर और दूसरी मुरादाबाद में है। 1998 में अश्विनी शर्मा के करियर में नया मोड़ आया जब उनके बेटे मनमोहन ने पढ़ाई पूरी कर ली। उन्होंने बेटे के साथ मिलकर केमिकल बिजनस शुरू किया। कुछ समय बाद अश्विनी शर्मा किसी काम के सिलसिले में पूर्वी अफ्रीकी देश की यात्रा करते हैं। वहां बहुत सारे दक्षिण भारतीय फूल की खेती से जुड़े मिलते हैं। वहां से फूलों की सप्लाई यूरोपीय देशों को हो रही होती है जिससे अच्छी आय होती है। अश्विनी के दिमाग में भी फूलों की खेती का आइडिया आया। इसके पीछे वजह उनका गांव था। वह चाहते थे कि वह कुछ ऐसा करें जिससे उनके गांव के लोगों को फायदा हो सके। काफी सोच-विचार कर शर्मा ने क्षेत्र में मशरूम उगाने का फैसला किया। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के सोलन का दौरान किया और वहां उन्होंने मशरूम की खेती के बारे में जानकारी जुटाई और मशरूम का प्लांट स्थापित किया। उन्होंने एकीकृत संयंत्र स्थापित किया और उसके बाद मशरूम उगाने के लिए सीजनल हट तैयार करने की पहल की। बहुत से किसान अश्विनी शर्मा की मुहिम से जुड़े और मशरूम की खेती में योगदान कर रहे हैं। अपने अगले मिशन का जिक्र करते हुए अश्विनी शर्मा कहते हैं कि अब हम मशरूम, सब्जी और फलों की पैकिंग का नया प्रोजेक्ट शुरू करने जा रहे हैं ताकि शेल्फ लाइफ को बढ़ाया जा सके। ■

26

हर्ष पाल सिंह चौधरी

संस्थापक, अम्बे फाइटोएक्सट्रेक्टस, दिल्ली

गुजरात में एक छोटी सी फैक्ट्री से शुरू हुआ सफर आज उत्तराखंड के सुदूर इलाके में एक बड़ी हर्बल इंडस्ट्री तक पहुंच चुका है। हर्ष पाल सिंह चौधरी का जन्म सन्1972 में उत्तराखंड पौड़ी गढ़वाल जिले में बीरोंखाल ब्लाक के जमरिया गांव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ। पांच भाई बहनों के परिवार का आय स्रोत पारंपरिक खेती ही था। प्रारंभिक शिक्षा गांव में हुई एवं इसके बाद उच्च शिक्षा के लिए हरिद्वार का रुख किया और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से माइक्रोबायोलॉजी में स्नातकोत्तर होने के बाद कुछ प्रतिष्ठित कंपनियों में कार्य किया। कुछ वर्षों पश्चात उन्होंने गुजरात में एक छोटी सी फैक्ट्री से अपना व्यवसाय शुरू किया। कुछ साल बाद वह एक सफल उद्यमी के रूप में निखरने लगे। अब जब व्यवसाय के विस्तार की बात आई तो उन्होंने अपनी जन्मभूमि को चुना। भले ही यह एक मुश्किल फैसला था लेकिन कहीं न कहीं अपनी जन्मभूमि के लिए कुछ करने की चाह था। वह देवभूमि से पलायन और बेरोजगारी को लेकर चिंतित रहते थे।

वर्ष 2010 में उन्होंने अपन गांव जमरिया में अम्बे फाइटोएक्सट्रेक्टस प्रा. लि. नाम से एक फैक्ट्री की स्थापना की, जहां आज एक लाख स्कवायर फीट में फैली फैक्ट्री द्वारा उच्च गुणवत्ता की हर्बल औषधियां जैसे न्यूट्रासूटिकल, हर्बल पाउडर एक्सट्रेक्टस, हेल्थकेयर, पर्सनल केयर प्रोडक्ट तैयार कर देश एवं विदेशों में निर्यात किया जा रहा है। वर्तमान में आस पास के गांव के अधिकांश स्थानीय लोग इस कंपनी में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार पा रहे हैं। साथ ही स्थानीय किसान अपने क्षेत्र में होने वाले औषधीय पौधों जैसे बुरांस, आंवला, हल्दी एलोवेरा, सीताफल, बिच्छू घास, गेहूं कि घास इत्यादि कच्चा माल कंपनी को बेचते हैं तथा अपनी आजीविका चला रहे हैं। उनके इस सराहनीय प्रयासों से आसपास के क्षेत्रों के स्थानीय लोगों को रोजगार मिलने से पलायन कि समस्या काफी हद तक कम हो गई है। वर्तमान में दिल्ली एनसीआर में कॉर्पोरेट ऑफिस के साथ-साथ उत्तराखंड के हरिद्वार एवं सितारगंज औद्योगिक क्षेत्रमें भी फैक्ट्री स्थापित की है।

हर्ष पाल सिंह चौधरी का उद्देश्य केवल व्यसाय तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि रोजगार के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए अपने ट्रस्ट शीतल सिंह चौधरी चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम में स्वास्थ्य, शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहे हैं। पिछले 10 वर्षों से इस क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं शिक्षा शिविरों एवं उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत के प्रचार प्रासार के लिए सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में माध्यम से स्थानीय लोग लाभान्वित हो रहे हैं। ■

27

सुशील चंद्र बलूनी

वास्तु कंसलटेंट और न्यूमेरोलॉजिस्ट, दिल्ली

सुशील चंद्र बलूनी मूल रूप से पौड़ी के कांडाखाल के गांव बागी छोटी के रहने वाले हैं। इनके पिता का नाम स्व महानन्द बलूनी और माता का नाम श्रीमती अनन्ता देवी है। पिता महानंद बलूनी के निधन के कारण अल्पआयु में ही पढ़ाई और कमाई का बोझ आ गया। कक्षा दस में ही बलूनी ट्यूटोरियल्स के नाम से कोचिंग क्लासेज की शुरूआत की। यहीं से आंत्रप्रेन्योरशिप डेवलप हुई। देहरादून से आरम्भिक शिक्षा करने के बाद भविष्य की तलाश में 1993 में दिल्ली पहुंचे। यहां काम और शिक्षा दोनों एक साथ किया।

शारदा उकिल स्कूल ऑफ आर्ट से कॉमर्शियल आर्ट में प्रथम श्रेणी अर्जित कर ग्राफिक डिजाइनिंग व एडवरटाइजिंग व्यापार में प्रवेश किया। उन्हीं दिनों उत्तराखंड राज्य का आंदोलन तेज हुआ। इस दौरान लगभग 30 कार्टून एग्जीविशन दिल्ली और दिल्ली के बाहर उत्तराखंड के लिए की। राज्य बनने से पूर्व उत्तराखंड का प्रथम मानचित्र बनाने का श्रेय भी सुशील बलूनी को जाता है। ग्राफिक्स में सिक्योरिटी डिजाइनिंग, स्प्रिचुअल और पॉलिटिकल कैम्पेन डिजाइन किए। इस दौरान पारंपरिक तौर पर परिवार से मिला ज्योतिष-वास्तुशास्त्र एवं कर्मकांड का ज्ञान धीरे-धीरे करियर बनने लगा। देश-विदेश के बहुत से लोगों को वास्तु कंसलटेंट और न्यूमेरोलॉजिस्ट के रूप में अपनी सेवाएं देनी शुरू कीं। तत्कालीन उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने भी सुशील बलूनी की सेवाओं का लाभ मुख्यमंत्री आवास देहरादून, सचिवालय में मुख्यमंत्री कार्यालय बनाने तथा राज्य के अनेकों निमार्णों में लिया। आगे का जीवन इसी क्षेत्र में कॉरपोरेट कंसलटेट के रूप में शुरू हुआ। सुशील बलूनी इस समय बजाज समूह के चैयरमैन तथा रेमंड ग्रुप के चेयरमैन के सलाहकार के रूप में काम कर रहे हैं। वह व्यापार, शेयर मार्केट, फिल्म जगत, उद्योगपतियों, राजनीतिज्ञों तथा अन्य उच्च पदस्थ लोगों को देश-विदेश में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इसके अलावा वह श्रीजना - (कंसलटेंसी, रेमिडियल सरविसेज तथा कर्मकांड), परामर्श - (कंसलटेंसी और वास्तु रेमिडियल सरविसेज) और वैदिक कृषि एवं पशुधन क्षेत्र - प्राकृतिक कृषि, पशु धनउत्पादन तथा पारंपरिक जीवामृत, बीजामृत, दसपर्णामृत तथा धन जीवामृत द्वार हाईटैक नैट एवं वर्टिकल फॉर्मिंग, औषधीय वनस्पति तथा एग्रोफौरेस्ट्री संबंधी कार्य कर रहे हैं। उनकी पत्नी का नाम रितू बलूनी और बेटे का नाम विदित बलूनी है। ■

28

के. सी. पांडेय

सलाहकार, डायसी एक्सिस इंडिया, जापान

पेशे से टेलिकॉम इंजीनियर और पढ़ाई मैनेजमेंट में मास्टर्स। बिजनस की बारीकियों को समझने वाले केसी पांडेय ने खुद को एक क्षेत्र में सीमित नहीं रखा। उन्होंने इंडिया एंट्री स्ट्रैटिजी, बिजनस और रेगुलेटर फ्रेमवर्क में विशेषज्ञता हासिल की। इसके बाद अपने जुनून की बदौलत उन्होंने पत्रकारिता की। सोशल एक्टिविस्ट के तौर पर भी काम किया। उद्यमिता ने उनके करियर को आगे बढ़ाया। पहली पीढ़ी के उद्यमी के रूप में केसी पांडे जापानी बहुराष्ट्रीय कंपनी डाइकी एक्सिस इंडिया के सलाहकार की भूमिका निभा रहे हैं और कंपनी के भारतीय ऑपरेशन को गाइड कर रहे हैं। वह अत्याधुनिक संचार प्रौद्योगिकियों, आईटी, वायरलेस और ब्लूटूथ टेक्नोलॉजी के एक्सपर्ट हैं। 30 साल से ज्यादा के अपने करियर में उन्होंने कई आईटी कंपनियों का नेतृत्व किया है। वह उत्तराखंड के विकास और जनता के हित में सामाजिक गतिविधियों के प्रति हमेशा समर्पित रहते हैं। नर्चर ग्रोथ बायो फर्टिलाइजर (ओंटारियो, कनाडा और भारत) के रणनीतिक सलाहकार हैं। वह केके मैनजमेंट एंड इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड (इंडिया) के चेयरमैन और डीएनसी कम्युनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक रहे हैं। सॉफ्टब्लू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सीईओ रहे हैं, जो आईआईटी दिल्ली इन्क्यूबेशन सेंटर के परिसर से संचालित होती है। नेटवर्किंग और कम्युनिकेशन एडवांसमेंट के लिए समर्पित संस्था 'संचार' के वह संस्थापक और महासचिव हैं। इसके अलावा उन्होंने कई प्रकार की फसलों और कृषि से जुड़े क्षेत्रों में काम किया। वह अखरोट और अन्य नट फ्रूट उत्पादक संघ WANGAI के संस्थापक अध्यक्ष हैं। उन्होंने हिमालयी राज्यों जैसे अल्मोड़ा (उत्तराखंड), सोलन (हिमाचल प्रदेश) और ईंटानगर (अरुणाचल प्रदेश) में अखरोट के उत्पादन की संभावनाओं पर कई सेमिनार का आयोजन किया है। केसी पांडे विश्व ब्राह्मण संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष और ग्लोबल ब्राह्मण बिजनेस नेटवर्क के संयोजक हैं। वह एक साप्ताहिक अखबार भी निकालते हैं। इसका नाम पर्वतीय टाइम्स है जो हिमालयी राज्य के लिए नई दिल्ली से प्रकाशित होता है।

'आवाज सुनो पहाड़ों की' पहल के वह प्रोजेक्ट कैप्टन हैं। उन्होंने उत्तराखंड के कुमाऊं, गढ़वाल और जौनसारी क्षेत्र के दूरस्थ क्षेत्रों से गाने और नृत्य के लिए 12-30 वर्ष के आयु वर्ग की प्रतिभा को पहचानने और जुटाने में अहम भूमिका निभाई। वह हिमालयी राज्यों में अखरोट की खेती को बढ़ावा दे रहे हैं। किसानों, ग्रामीणों और युवाओं की आजीविका बढ़ाने के लिए ग्रामीण प्रौद्योगिकियों पर काम कर रहे हैं। पर्यावरण अनुकूल चीजों पर उनका ज्यादा जोर रहता है। केसी पांडेय ने प्रेम विद्यालय नैनीताल से स्कूली शिक्षा हासिल की। इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार में डिप्लोमा, औद्योगिक इंजीनियरिंग में डिग्री, मार्केटिंग में एमबीए किया है। ■

29

ममता रावत

प्रेसीडेंट, WICCI (पर्यटन और संस्कृति), देहरादून

आमतौर पर लोगों में यह धारणा रहती है कि बेटी को क्या पढ़ाना, उसे तो शादी के बाद पराए घर जाना है। यह सोच धीरे-धीरे बदल रही है। दिलचस्प यह है कि इस सोच को बदलने में सबसे बड़ी भूमिका वो बेटियां निभा रही हैं, जो सफलता के नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। स्पेस से लेकर डिफेंस, शिक्षा से लेकर से तकनीक के क्षेत्र में आज बेटियों का बोलबाला है। काम छोटा हो या बड़ा, मुश्किल हो या आसान बेटियां अपना लोहा मनवा रही हैं। पहाड़ की एक ऐसी ही बेटी है जो आज उन लाखों बेटियों के लिए उम्मीद की नई किरण बनकर उभरी हैं। हॉटमांड मिसेज इंडिया 2021 की पहली रनर अप रहीं ममता रावत उत्तराखंड का एक जाना पहचाना नाम है। उन्होंने एक नहीं, एक साथ अनेक क्षेत्रों में काम किया है और कर रही हैं। बहुमुखी प्रतिभा की धनी ममता एक मशहूर उद्यमी हैं। वह भारतीय महिला वाणिज्य एवं उद्योग चैंबर, उत्तराखंड (पर्यटन और संस्कृति) की अध्यक्ष हैं। उन्होंने संस्कृति, पर्यटन और कला के क्षेत्र काफी काम किया है। वह पौड़ी जिले के बैंगवारी गांव की रहने वाली हैं। एक तरफ वह महिलाओं के लिए मिसाल हैं तो दूसरी तरफ जरूरतमंद लोगों को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध करा रही हैं। वह अपशिष्ट प्रबंधन, सौर ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी और मीडिया समेत कई क्षेत्रों में एक साथ काम कर रही हैं। उनकी कोशिश रहती है कि उत्तराखंड के लोगों को अपने क्षेत्र में काम मिले और वे सशक्त बनें। उद्योग के साथ वह बालिका शिक्षा, वंचित वर्ग के लिए शिक्षा में सहयोग के साथ-साथ कई एनजीओ को भी मदद कर रही हैं। बीएससी, एमएससी (बायो-टेक्नोलॉजी) के बाद उन्होंने बीएड किया। इसके बाद भी पढ़ाई का क्रम जारी रखा और नए-नए क्षेत्रों का कौशल हासिल किया। उन्होंने इमेज मैनेजमेंट और सॉफ्ट स्किल्स ट्रेनिंग की पढ़ाई पूरी की। हिंदी और अंग्रेजी भाषा पर बराबर पकड़ रखने वालीं ममता रावत को यात्रा करने और गाने का शौक है। इनोवेशन, शिक्षा और टीम बिल्डिंग के क्षेत्र में उनका अनुभव विशिष्ट है। शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उन्होंने एक दशक तक काम किया है। अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में उन्होंने विशेषज्ञता हासिल की है। बायो-टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में उनके पास अटल इनोवेशन लैब्स में काम करने का भी अनुभव है। फैकल्टी डेवेलपमेंट कार्यक्रम के जरिए उन्होंने यूनिवर्सिटी के फैकल्टी के कौशल को बढ़ाने के लिए काम किया है। इतना ही नहीं, वह एसोचैमः उत्तराखंड कौशल विकास परिषद की सदस्य हैं। इंडियन मोशन पिक्चर्स प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन की सदस्य के साथ ही वह इमेज मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स एसोसिएशन की भी मेंबर हैं। उन्हें उत्तराखंड में सोशल गोलकीपर अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है। ■

30

इंद्र मणि बलूनी

होटलियर, लंदन

इंद्रमणि बलूनी की कहानी एक ऐसे उत्तराखंडी की सक्सेस स्टोरी है, जो सिर्फ और सिर्फ अपनी ईमानदारी, अटूट हिम्मत एवं सच्ची कर्तव्य परायणता के बल बूते पर अनजाने ही में हाथ आए व्यवसाय में शिखर पर पहुंच गया। गांव का यह लड़का किसी विशेष ध्येय को लेकर नहीं निकला था लेकिन जीवन में जो भी मौका हाथ लगा, उसी में पूर्ण जुनून से पारंगत होता गया। अपने हुनर के बूते उसने बाजार में अपनी पहचान तथा डिमांड बढ़ाई। एक वक्त पहाड़ी पगडंडियों पर दौड़ने वाला यह किशोर, आज मर्सडीज कारों में इंग्लैंड की चौड़ी सड़कों पर शान से चलता है। पौड़ी के एक सुदूर गांव में जन्में, ग्यारह भाई बहनों में सबसे छोटे इंद्र मणि बलूनी की बाहरवीं तक की शिक्षा गांव में ही हुई। छोटी अवस्था ही में पिता का साया सिर से उठ गया। दिल्ली में बहन के पास पहुंचे एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट हाउस में 500 रुपये प्रतिमाह की नौकरी करने लगे। उसी दौरान घर वालों की जिद पर संतूर होटल में 3 साल की ट्रेनिंग की। फिर दिल्ली के ही कुछ होटलों, हॉलिडे-इन, रेडिसन एवं बड़े ब्रांड ग्रैंड हयात में काम सीखने का अवसर मिला। इस दौरान उन्होंने लगातार निपुणता, एकाग्रता एवं सरलता से होटल इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बना ली। एक बहुत बड़े व्यापारी ने उनके बनाए एक पकवान खाने के बाद कहा कि तुम एक दिन बहुत बड़े शेफ बनोगे। किंतु सरल स्वभाव वाले इंद्र मणि बलूनी ने इस पर खास गौर नहीं किया। इसी बीच किसी बड़े होटलिएर ने उन्हें लंदन में बतौर तंदूर स्पेशलिस्ट वहां जाने का प्रस्ताव दिया। यह एक नई चुनौती थी, लेकिन साथ ही सीखने का अनुभव था। कुछ होटल्स में हेड शेफ का काम किया और फिर कुछ के नए होटल्स की शुरूवात करने का मौका। इस बीच काफी ग्राहकों व होटल इंडस्ट्री के दिगज्जों से अच्छी जान पहचान हो गई और इसी संदर्भ में जरूरी सामान खरीदने चीन, दुबई व भारत आना भी हुआ। यह एक बहुत बड़ा लाभकारी अनुभव रहा। इस बीच कुछ लोग दबाव डालने लगे कि खुद का रेस्टोरेंट खोल लो। जमा पूंजी एवं बाहरी सहायता से 'बकाबा' नाम से बर्मिंघम, इंग्लैंड में अपने होटल खोला। यह वर्तमान में इंग्लैंड के मल्टीकुजिन और उत्तराखंडी व्यंजन के लिए बहु प्रचलित है। इसके अतिरिक्त वह कई बड़े होटल्स में परमर्श दाता भी हैं। उन्हें क्वालिटी कंट्रोल के लिए भी वहां की सरकार द्वारा अनेक अवार्डस से सम्मानित किया गया है। बलूनी इतने बड़े मुकाम को हासिल करने के बावजूद भी अपने घर, पहाड़ तथा लोगों को पूरी तरह याद करते हैं और यथासंभव मार्गदर्शन या सहायता के लिए सदैव तैयार रहते हैं। उनका मानना है कि उत्तराखंडी सम्पूर्ण विश्व में होटल इंडस्ट्रीस में छाए हुए हैं। वो सर्वात्तम शेफ अथवा कर्मियों की श्रेणी में गिने जाते हैं। इस क्षेत्र में युवाओं के लिए देश विदेश में अनेक अवसर मौजूद हैं। ■

31

गोपाल उनियाल

निदेशक, सिद्धि इंटरनेशनल, फरीदाबाद

सिद्धि इंटरनेशनल ने भारत में पाउच पैकिंग मशीन के शीर्ष सेवा प्रदाताओं की सूची में अपना नाम बनाया है। यह कंपनी 2003 में स्थापित हुई थी। सिद्धि इंटरनेशनल को ट्रेड इंडिया की उन सत्यापित कंपनियों की सूची में सूचीबद्ध किया गया है जो एफएफएस पाउच पैकिंग मशीन आदि की विस्तृत श्रृंखला पेश करती हैं।

दिल्ली एसीआर में पैकिंग मशिनरी एवं फूड प्रोसोसिंग प्लांट की निमार्ता सिद्धि इंटरनेशनल कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर गोपाल उनियाल मूल रूप से पौड़ी गढ़वाल से हैं। उनके पिता स्वर्गीय टीआर उनियाल एक सैन्य अधिकारी थे। सैन्य परिवेश में पले बढे गोपाल उनियाल सात भाई बहन हैं। जिसमें उनकी चार बड़ी बहनें और दो छोटे भाई हैं। अपने माता पिता जी से उन्हें हमेशा मेहनत करने की सीख व प्रेरणा मिली। वे हमेशा से ही जॉब सेक्टर के बजाए जॉब क्रियेटर बनना चाहते थे। अपनी पढ़ाई पूरी करने के पश्चात एक स्टील इंडस्ट्री में मार्केटिंग एक्सीक्यूटिव के पद पर कार्य की शुरूआत की और महज पांच वर्षों में ब्रांच मैनेजर के पद से त्यागपत्र देकर स्टील कंपनी की एजेंसी ले ली। साथ ही उन्होंने 2003 में सिद्धि इंटरनेशनल कंपनी की स्थापना की, जिसमें वे एक ग्राम से लेकर दस किलोग्राम तक की ऑटोमैटिक पैकेजिंग मशीनें एवं फूड प्रोसेसिंग प्लांट लगाने लगे, जिनमें चिप्स, नमकीन, आटा बिस्किट, दवाइयां, शैम्पू, डिर्टजेंट, साबुन आदि प्रोडक्ट बनते और पैक होते हैं। कंपनी न सिर्फ भारत वर्ष अपितु अन्य देशों में भी निर्यात करती है। उत्तराखंड के प्रति अगाध प्रेम के कारण गोपाल उनियाल ने जल्द ही उत्तराखंड में फूड प्रोसेसिंग प्लांट लगाने की योजना बना रहे हैं जिससे वे यहां रोजगार प्रदान कर सकें व उत्तराखंड के विकास में अपना सहयोग दे सके। ■

32

सतीश नेगी

निदेशक, क्रावोवा फूड एंड बेवरेजेज प्रा. लि., मुंबई

उत्तराखंड के चंबा से ताल्लुक रखने वाले सतीश नेगी इस समय मुंबई में रहते हैं। 40 साल की उम्र में पहाड़ का नाम रोशन किया है। सतीश भारत में तेजी से बढ़ती एक प्रमुख एफएमसीजी कंपनी क्रावोवा फूड एंड बेवरेजेज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक हैं। उन्होंने अपनी स्कूली पढ़ाई देहरादून के बोर्डिंग स्कूल से की है। इसके बाद दिल्ली से स्नातक और लंदन से मास्टर्स की डिग्री हासिल की। एमबीए पूरा करने के बाद उन्होंने भारत में अपना व्यवसाय शुरू किया लेकिन उससे पहले उन्होंने विभिन्न देशों में कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ काम किया।

सतीश नेगी का फूड सेक्टर से काफी लगाव रहा है और इसके चलते उन्होंने एफएमसीजी ब्रांड शुरू किया जो आज युवाओं को सस्ते में गुणवत्तापूर्ण खाद्य उत्पाद उपलब्ध कराता है। जूस हो या कोल्ड कॉफी, आप ऑनलाइन शॉपिंग करके स्वाद ले सकते हैं। बहुत कम समय में कंपनी ने 75 करोड़ का वैल्यूएशन हासिल कर लिया है और अगले पांच वर्षों में इसे 500 करोड़ तक पहुंचाने का लक्ष्य है। सतीश नेगी मेहनती और ईमानदारी की मिसाल हैं। वह गढ़वाल में अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं। वह हरसंभव तरीके से अपने समुदाय की सहायता करने के मिशन में भी योगदान कर रहे हैं। ■

33

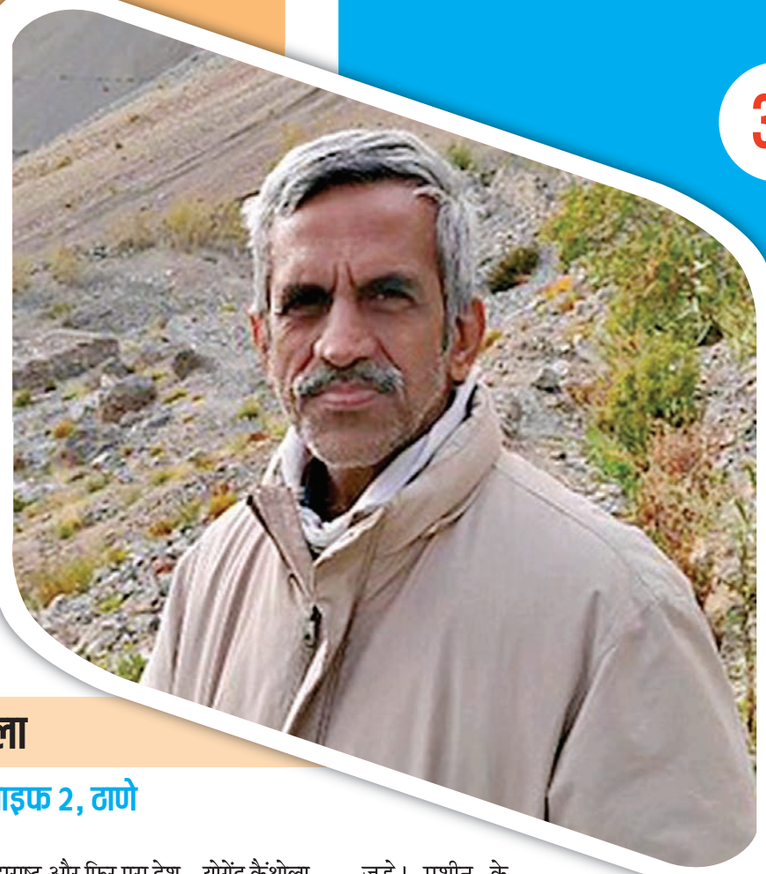

योगेंद्र कैंथोला

प्रमोटर, बैटरी लाइफ 2, ठाणे

उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और फिर पूरा देश... योगेंद्र कैंथोला कुछ ऐसे ही जीवन और सफलता की सीढ़ियां चढ़ते गए। लेड एसिड बैट्री के क्षेत्र में योगेंद्र एक बड़ा नाम हैं। वह मूल रूप से पौड़ी गढ़वाल के पाबो क्षेत्र के रहने वाले हैं। उनका जन्म कोलकाता में हुआ और बाद में वह ठाणे में रहे। यहीं पर उन्होंने पढ़ाई की और अपनी कर्मभूमि बना ली। योगेंद्र कैंथोला ने अपनी शुरूआती पढ़ाई ठाणे और मुंबई में पूरी की। 17 साल की उम्र में उन्होंने हार्ड मेटल टूल्स एंड डाइज नाम से ठाणे में मशीन टूल बनाने का अपना पारिवारिक व्यवसाय करना शुरू किया। वह 2020 तक इसका प्रबंधन करते रहे। हालांकि योगेंद्र ने खुद को एक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रखा। उन्होंने औषधीय पौधों की खेती और शौक के तौर पर साहसिक पर्यटन को बढ़ावा दिया। इसके पीछे उनका उत्तराखंड कनेक्शन वजह बना। वह गढ़वाली, हिंदी, मराठी, बंगाली और गुजराती भाषा जानते हैं। योगेंद्र कैंथोला बैट्री लाइफ 2 के प्रमोटर हैं। वह 2010 से सौर ऊर्जा और नवीकरणीय स्टोरेज टेक्नोलॉजी क्षेत्र से जुड़े हुए हैं और इन प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल वाली परियोजनाओं में उन्हें काम का काफी अनुभव है। देहरादून में उन्होंने सौर ऊर्जा परियोजना को क्रियान्वित किया। इसके अलावा वह कई सौर ऊर्जा आधारित कंपनी के साथ जुड़े रहे। 2017 में कैंथोला लेड-एसिड बैट्री के डी-सल्फेशन (रीजेनरेशन) के लिए डिजाइन किए उपकरणों से संबंधित प्रोजेक्ट से जुड़े। मशीन के मालिक भारतीय परिवेश में अच्छे परिणाम हासिल नहीं कर पा रहे थे।

ऐसे में कैंथोला ने वैश्विक स्तर पर ऐसी मशीनों की तलाश शुरू की जो भारत के लिए बेहतर परिणाम दे सकती थीं। ऐसी एक डिजाइन का पता चला। उन्हें उपकरण की प्रभावशीलता को स्थापित करने का अवसर मिला और वह जीई टी एंड डी जैसी प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनी के लिए बैट्री रीजेनरेशन के प्रोजेक्ट में जुड़े और यह काफी सफल रहा। उन्हें बेहतरीन फीडबैक मिला। मिस्टर कैंथोला ने रीजेनरेशन में एक बड़ा व्यावसायिक अवसर देखा और अपना पूरा ध्यान बैट्री रीजेनरेशन सेवाओं को बढ़ावा देने में लगाया। आज बैट्री लाइफ2 ने भारत और अफ्रीका में सभी प्रकार की 9000 से अधिक बैट्री रीजेनरेशन का काम पूरा कर लिया है और तेजी से कारोबार का विस्तार हो रहा है। कमजोर और खराब हो चुकी लेड एसिड बैट्री का यह रीजेनरेशन न केवल बैट्री की लाइफ को दोगुना या तीन गुना बढ़ा देता है बल्कि बैट्री रीसाइक्लिंग उद्योग के कारण होने वाले भारी प्रदूषण को भी रोकता है। लेड-एसिड बैट्री बहुतायत में प्रयोग आने वाली बैट्री है। पुनः आवेशित (चार्ज) करने योग्य बैट्रियों में यह सबसे पुरानी बैट्री है। यह बहुत सस्ती होती है जिसके कारण कारों, ट्रकों, अन्य गाड़ियों में खूब प्रयोग की जाती है। ■

34

जसबीर सिंह बिष्ट

संस्थापक, राज एंटरप्राइजेज, फरीदाबाद

अक्सर कहा जाता है, नाम बनता लगन और मेहनत से बनता है। उत्तराखंड से निकलकर देश के अलग-अलग हिस्सों में अपनी कामयाबी की कहानी लिखने वाले उत्तराखंड के लोगों का यही सबसे बड़ा हुनर रहा है। आज उद्योग जगत में भी उत्तराखंड के लोग अपनी अलग पहचान बनाने में कामयाब रहे हैं। एक ऐसी ही कहानी है उपौड़ी जिले के नैनीडांडा ब्लॉक के 'मैरा' गांव में 24 जनवरी 1978 को जन्में जसबीर सिंह बिष्ट की। पिता सेना में थे। लेकिन एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे जसबीर के सपने बड़े थे। उन्हें कुछ अलग करना था। जनता इंटर कॉलेज अंदरोली से पढ़ाई पूरी करने के बाद जसबीर अपने सपनों को पूरा करने के लिए दिल्ली पहुंच गए। ये बात साल 2000 की है। हालांकि दिल्ली में न तो कोई ठिकाना था और न सुरक्षित नौकरी। बस करने के लिए मेहनत थी और नाम बनाने का मजबूत इरादा।

शुरूआत कहीं से तो करनी था, इसलिए कई जगह नौकरी की। काम जमा नहीं तो नौकरी भी छोड़ी। इसी बीच शादी हो गई। अब एक तरफ अपना सपना पूरा करना था और दूसरी तरफ परिवार की जिम्मेदारी। लेकिन धुन पक्की थी कि अपना खुद का काम करेंगे और मालिक बनेंगे। काम करते हुए जसबीर ने एंब्रोइडरी, गारमेंट्स और टेक्सटाइल इंडस्ट्री की बारीकियां सीखीं। इसके बाद साल 2004 में अपना काम शुरू किया। कंपनी का नाम रखा राज एंटरप्राइजेज। आज राज एंटरप्राइजेज एंब्रोइडरी और गारमेंट्स इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बना चुका है। यह उद्योगों का ऐसा समूह है जिसकी योजना बनाने, उसे क्रियान्वित करने और प्रबंधन करने के पीछे पूरा दिमाग जसबीर बिष्ट का रहा। बहुत कम समय में उन्होंने राज एंटरप्राइजेज को दूसरे प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले बड़ा बना दिया। आज उनके पास एंब्रोइडरी, गारमेंट्स, टेक्सटाइल में ऑलराउंड विशेषज्ञता है।

राज एंटरप्राइजेज हरियाणा के फरीदाबाद में स्थित हैं। साल 2011 से इस कंपनी के पास एंब्रोइडरी के काम में महारात है। यहां कंप्यूटर मल्टी एंब्रोइडरी, सीक्वेंस, चमड़े की कढ़ाई, चमड़े की बेल्ट कढ़ाई, कटवर्क कढ़ाई, पैच वर्क कढ़ाई, कम्प्यूटरीकृत हैंडवर्क कढ़ाई जैसे काम किए जाते हैं। राज एंटरप्राइजेज के कस्टमर में चीन और लंदन की कई कंपनियां शामिल हैं। इस समय उनकी कंपनी का टर्नओवर 6 करोड़ रुपये सालाना है। इससे अलावा कंपनी का कारोबार दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी फैल रहा है। उद्यमी होने के साथ-साथ जसबीर समाजसेवा के कार्यों में खासतौर पर सक्रिय रहते हैं। इसके अलावा उत्तराखंड में क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर कई तरह के आयोजन कराते रहते हैं। वह पौड़ी क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष भी हैं। ■

35

हरीश चंद्र उनियाल

प्रेसीडेंट, इंडियन अचीवर्स फोरम, दिल्ली

उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल में एक गांव है कफना, पट्टी कड़ाकोट। यहीं से ताल्लुक रखते हैं हरीश चंद्र उनियाल। वह तीन बड़े पब्लिकेशंस को लीड कर रहे हैं। वह इंडियन अचीवर्स फोरम के अध्यक्ष हैं, जो दो दशक से भी ज्यादा समय से एमएसएमई और स्टार्टअप्स को बढ़ावा दे रहा है। वह अचीवर्स वर्ल्ड, सीएसआर टाइम्स एंड ट्रैवल टर्टल के प्रबंध संपादक हैं। विज्ञापन, इवेंट और ब्रांड मैनेजमेंट कंपनी ब्रांडवर्क्स मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के भी वह प्रबंधन निदेशक हैं। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा अपने गांव के स्कूल में पूरी की। शकरपुर, दिल्ली से उच्च शिक्षा हासिल की। 1993 में दिल्ली यूनिवर्सिटी से उन्होंने बीकॉम की पढ़ाई की।

आज हरीश मीडिया, सीएसआर, ब्रांडिंग और सामाजिक उद्यमिता के क्षेत्र में काम करने वाले एक प्रसिद्ध उद्यमी हैं। वह एक कुशल पेशेवर, व्यावसायिक कौशल वाले योग्य लीडर और टीम बिल्डिंग क्षमताओं से लबरेज हैं। उन्होंने अमेरिका, यूके रूस और कई देशों में कई भारतीय और अंतरराष्ट्रीय बिजनस डेलिगेशन का नेतृत्व किया है। उन्होंने विश्व स्तर पर एमएसएमई और स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने में उल्लेखनीय काम किया है। उन्होंने सार्वजनिक व निजी उद्यमों और सामाजिक क्षेत्र के लिए 'इंडियन अचीवर्स अवॉर्ड' की शुरूआत की, जो हर साल भारत में और विदेश में दिया जाता है। उनकी सीएसआर टाइम्स अब कॉर्पोरेट्स, सरकारी संस्थानों और सामाजिक क्षेत्र में खूब पढ़ी जाने वाली मैगजीन है। वह कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय चैंबर ऑफ कॉमर्स से भी जुड़े हैं। वह 80 के दशक में दिल्ली आ गए थे लेकिन विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से उत्तराखंड में अपनी जड़ों से जुड़े रहे। उन्होंने उत्तराखंड के स्कूलों में बुनियादी ढांचे और शिक्षा के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वह उत्तराखंड के युवाओं को खेल और शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रेरित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने ग्राम पर्यटन के क्षेत्र में काम शुरू किया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र में लोगों को रोजगार मिलने के साथ उनके जीवन स्तर में सुधार हो सकता है। ■

36

रवि गोसाईं

संस्थापक, टूरिज्म इंटरप्राइजेज, नोएडा

रवि गोसाईं पौड़ी गढ़वाल के पाबो ब्लॉक के चैर तल्ला गांव के रहने वाले हैं। उनका जन्म मध्य प्रदेश के ग्वालियर शहर में हुआ। उनके पिता भारतीय वायुसेना में थे। उन्होंने केंद्रीय विद्यालय से स्कूल शिक्षा हासिल की और जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से कॉलेज की पढ़ाई पूरी की। अर्थशास्त्र में स्नातक और पर्यटन में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। साल था 1999 और उन्होंने 26 साल की उम्र में दिल्ली में एक ट्रैवल कंपनी बनाई। इसका नाम रखा इरको ट्रैवल्स प्राइवेट लिमिटेड। 22 साल तक पर्यटन व्यवसाय को सफलतापूर्वक संचालित करने के दौरान भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा दो बार- 2009 और 2014 में राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें यात्रा और पर्यटन क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले। उनके टैलंट की बात करें तो वह हार्डको मार्केटिंग प्रोफेशनल है, सोशल मीडिया की बारीकियों को समझते, ट्रैवल सेक्टर के लिए वह समर्पित हैं और सक्रिय स्पोर्ट्स प्लेयर होने के साथ ही फिटनेस को काफी महत्व देते हैं। वह सभी महाद्वीपों की यात्रा करते हुए 87 से ज्यादा देश घूम चुके हैं। अब तक उनका देश के भीतर ट्रैवल का काम था लेकिन 2014 में उन्होंने 'टूरिज्म एंटरप्राइजेज' के नाम से आउटबाउंड टूर कंपनी शुरू की। 2019 में उन्होंने नीदरलैंड में 'सैफ्रन वर्ल्ड बी. वी.' नाम से एक कंपनी खड़ी की। आइसलैंड में दूसरे सबसे बड़े ग्लेशियर आइसलैंडिक ग्लेशियर लैंगजोकुल के पहले भारती सेल्फ ड्राइविंग अभियान का हिस्सा रहे और लिम्का बुक रिकॉर्ड में नाम कमाया। 2015 में स्पेशल चार पहिया गाड़ी (आर्कटिक ट्रक) से 7 दिनों में 1032 किमी की दूरी तय की। टूर ऑपरेटरों के संघ में एक दशक से अधिक समय से सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं। इस समय वह उपाध्यक्ष हैं। IATO भारत में टूर ऑपरेटरों की शीर्ष संस्था है। उन्हें यूनिवर्सिटी और मोटिवेशनल क्लासेज के लिए गेस्ट लेक्चर के लिए आमंत्रित किया जाता है। उत्तराखंड पर्यटन पेशेवर संघ (रजि.) के संस्थापक अध्यक्ष के तौर पर वह उत्तराखंड में पर्यटन उत्पादों को बढ़ावा दे रहे हैं और स्थानीय लोगों को पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र में रोजगार पाने में मदद करते हैं। पौड़ी गढ़वाल के कंधारा गांव में उन्होंने 2009 में एनजीओ 'नव ज्योति हमारी समृद्ध समिति' की स्थापना की। वह कंधारा, झाली माली में 150 से ज्यादा छात्रों के साथ स्कूल चला रहे हैं। वह पिछले 2-3 साल से गांवों से पलायन को रोकने और खेती में आजीविका कमाने में सहयोग कर रहे हैं। 2020 के मध्य में लॉकडाउन के दौरान उन्होंने एग्रीटेक स्टार्टअप 'फार्मर्स फैमिली' के नाम से शुरू किया। इसे वाणिज्य मंत्रालय से मान्यता प्राप्त है और आईआईएम लखनऊ से सहयोग मिल रहा है। ■

37

विजय भट्ट

संस्थापक, मांगल.कॉम, देहरादून

किसी ने क्या खूब कहा है कि अगर इंसान किसी काम को सच्चे मन से करने की ठान ले तो पूरी कायनात उस काम को पूरा करने में उस इंसान के साथ लग जाती है। ऐसा ही एक वाकया विजय भट्ट की जिन्दगी में भी हुआ। उन्होंने 2009 में maangal.com नामक एक उत्तराखंडी मेट्रीमोनियल साइट की स्थापना की, ताकि गढ़वाल और कुमांऊ के लोगों को अपने लिए एक ही प्लेटफार्म पर अच्छे रिश्ते मिल सकें। इसके साथ ही वह चाहते थे कि मांगल के माध्यम से पहाड़ी की संस्कृति और पहाड़ के लोगों को बेहतर सेवा प्रदान किया जा सके। इसी उद्देश्य से maangal.com का जन्म हुआ। आज 12 साल बीतने पर maangal.com उत्तराखंड की सबसे बड़ी मेट्रीमोनियल साइट के रूप में उभर रहा है। maangal.com पोर्टल विश्व के कई देशों में ओपन होती है और दुनियाभर से गढ़वाली और कुमांऊनी अपने लिए घर बैठे रिश्ता ढूंढ रहे हैं। इस पोर्टल में पहले के मुकाबले कई सुधार किए गए हैं। पहले इस पोर्टल में कैटेगिरी नहीं थी, अब साफ्टवेयर में सुधार किया है और जिस भी कैटिगिरी के रिश्ते चाहिए वह आपको तुरन्त ही मिल जाएगा। अपने 12 साल के सफर में maangal.com ने लोगों को अच्छे रिश्ते देकर उनकी सहायता ही नहीं की बल्कि कोविड महामारी के समय भी लोगों की सहायता करने में बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभाई। कंपनी ने स्वयं एक किचन की स्थापना की, जहां से रोजाना कोविड से ग्रस्त परिवारों के घर खाना पहुंचाया गया।

इस दौरान विजय भट्ट की पत्नी स्वाति भट्ट को भी कोविड संक्रमण का सामना करना पड़ा। हालांकि पीछे न मुड़कर देखने का मन बना चुके विजय भट्ट ने हिम्मत नहीं हारी और कठिन परिस्थितियों का सामना किया। कोविड होने के बाद भी विजय भट्ट ने समाज सेवा को निरन्तर रूप से जारी रखा। उन्होंने महसूस किया कि आज भी समाज में एक तबका ऐसा है, जिसे हमारे सहारे की बहुत जरूरत है। इसके मद्देनजर विजय भट्ट ने 2021 में मांगल चैरीटेबल ट्रस्ट की स्थापना की। इसके अंर्तगत रोजाना वह 75 से अधिक गरीब और कूड़ा बीनने वाले बच्चों को भरपेट पौष्टिक भोजन मुहैया करवाते हैं। यही नहीं, वह इन बच्चों की पढ़ाई, कपड़े, दवाई व अन्य जरूरतमंद चीजों का भी ख्याल रखते हैं।

मांगल ट्रस्ट द्वारा पौड़ी गढ़वाल में एक स्कूल की स्थापना भी की गई है जहां के बच्चों को स्कूल यूनिफार्म, खाना, पढ़ाई व आधुनिक टैक्नोलोजी से लैस क्लासरूम ये सभी चीजें मुफ्त में प्रदान की जाती हैं। विजय भट्ट का जन्म 14 जून 1972 को दिल्ली में हुआ था। उनके परिवार में माता-पिता के अलावा पत्नी स्वाति भट्ट और बेटा आर्यन है। उनका कहना है कि मांगल पोर्टल के माध्यम से हर रोज एक-दो शादियां चलती रहती हैं। ■

38

दिव्या रावत

सौम्या फूड्स, देहरादून

एमिटी विश्वविद्यालय जैसे शिक्षण संस्थान से सोशल वर्क में स्नाकोत्तर उपाधि प्राप्त करने वाली दिव्या रावत ने किसी बड़ी कंपनी में मोटे वेतन पर नौकरी करने के बजाय पहाड़ में रहकर कुछ करने की ठानी और देहरादून आकर मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में काम शुरू किया। इस क्षेत्र में दिव्या रावत के काम से आज सभी परिचित हैं। मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में अभिवन पहल करने वाली दिव्या को मशरूम गर्ल के रूप में जाना जाता है। उन्हें उत्तराखंड सरकार ने ब्रांड एंबेसडर भी नियुक्त किया। मूल रूप से चमोली जनपद के कोट कंडारा गांव की निवासी दिव्या ने स्कूली शिक्षा देहरादून में ली, लेकिन इसके बाद उन्हें परिवार के साथ दिल्ली जाना पड़ा। एमिटी यूनिवर्सिटी ने सोशल वर्क में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद वह देहरादून लौट आई। दिव्या ने मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में हाथ आजमाने का मन बनाया, ताकि वह खुद का रोजगार करने के साथ ही उन लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करे जो दिल्ली में कुछ हजार की नौकरी के लिए खाक छानते हैं। उन्होंने कुछ दिन देहरादून में और फिर सोलन में मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण लिया और देहरादून में ही उत्पादन शुरू कर दिया। पहले साल टर्नओवर तीन लाख रुपये रहा। इसने उनमें भरोसा मजबूत किया। अपना काम शुरू करने के बाद दिव्या ने पहाड़ में जाकर लोगों को मशरूम का उत्पादन करने का प्रशिक्षण देने की योजना पर काम शुरू किया। इस काम में भी उन्हें सफलता मिली। 30 साल की दिव्या सौम्या फूड प्राइवेट कंपनी चलाती हैं। आज मशरूम के जरिये करीब दो करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार कर रही हैं। उत्तराखंड के 10 जिलों में अब तक मशरूम उत्पादन की 55 से ज्यादा यूनिट लगा चुकी हैं। इसके साथ ही दिव्या हिमालय क्षेत्र में पाई जाने वाली कीड़ा जड़ी की एक प्रजाति कार्डिसेफ मिलटरीज का भी उत्पादन करती हैं। बाजार में इसकी कीमत दो लाख रुपये प्रति किलो से अधिक है।

दिव्या लोगों को देहरादून में अपने फार्म में टेनिंग देती हैं। इसके बाद उनके गांव में जाकर प्लांट लगाने में मदद करती हैं और पहली फसल अपनी देखरेख में तैयार करवाती हैं। अभी तक दिव्या रुद्रप्रयाग के कविल्ठा, पौड़ी के पोखड़ा, देहरादून के निकट थानों और टिहरी के सरियाधार में प्लांट लगवा चुकी हैं। खास बात यह है इन प्लांटों में पैदा होने वाली मशरूम की मार्केटिंग में भी दिव्या पूरी मदद करती है। इस समय दिव्या मशरूप की विभिन्न प्रजातियों पर काम कर रही हैं। पूर्वोत्तर राज्यों में भी परामर्श के लिए बुलाया जा रहा है। ■

39

राजेश खुगशाल

संस्थापक, खुगशाल कैटर्स, कोटद्वार

पहाड़ की सोंधी खुशबू अपने दिल में बसाए उत्तराखंडी आपको पूरे देश ही नहीं, दुनिया के देशों में भी मिल जाएंगे। वे अपनी मेहनत और लगन से नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। इसमें एक चीज मिसिंग रह जाती है और वह है उनका खानपान। वे जहां रहते हैं मजबूरन वहां का खानपान अपना लेते हैं। लेकिन दुख तब होता है जब वे पंजाबी, साउथ इंडियन, राजस्थानी, चाइनीज जैसी तमाम डिश पाते हैं लेकिन उत्तराखंडी पकवान नहीं मिलते। देशज अंदाज में बने लजीज पहाड़ी पकवान हर उत्तराखंडी और शौकीन लोगों तक पहुंचाने के लिए कोटद्वार के राजेश खुगशाल ने शानदार पहल की है। पौड़ी गढ़वाल में रहने वाले राजेश ने खुगशाल केटरिंग शुरू की है। वह कहते हैं कि मैं बस अपने उत्तराखंडी व्यंजनों को बचाए रखना चाहता हूं जिससे लोग अपने क्षेत्र का स्वाद न भूलें। वह पहाड़ी/कुमाऊं पकवान खिलाने के साथ-साथ उत्तराखंडी बहनों और भाइयों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहे हैं। उन्होंने 2010 में कोटद्वार में उत्तराखंड फूड फेस्टिवल के साथ अपनी यात्रा शुरू की। इसके बाद उन्होंने पूरे भारत में कई शादियों, मेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उपस्थिति दर्ज कराई। वह कहते हैं कि हर उत्तराखंडी को अपने खान-पान और संस्कृति से लगाव है। आज भागमभाग भरी जिंदगी में लोगों के पास समय की कमी है। कंक्रीट के शहरों में वे फ्लैटों में चिपके रहते हैं और खाने के नाम पर पिज्जा-बर्गर से आगे नहीं निकलना चाहते हैं। सच मानिए, ज्यादा विकल्प दिखता भी नहीं क्योंकि नई पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति को अपनाना चाहती है। ऐसे में कितना अच्छा हो आपके क्षेत्र का खाना आपकों रोज न सही, आयोजनों में उपलब्ध कराया जा सके। राजेश खुगशाल ने कैटरर्स मालिक होने के साथ ही उत्तराखंडी भोजन के जायके को जन-जन तक पहुंचा रहे हैं। एक दशक पहले उन्होंने 'खुगशाल जी की रस्याण' नाम से खुगशाल कैटरर्स की नींव पड़ी। वह बताते हैं कि उनके दिमाग में पहाड़ी स्वाद को परोसने का आइडिया यह देखकर आया कि लोग साउथ इंडियन, राजस्थानी, पंजाबी मांगकर खाते हैं तो उत्तराखंड डिश क्यों नहीं। इसके साथ ही राजेश ने उत्तराखंड की लुप्त होती भोजन श्रृंखला को फिर से आगे बढ़ाने की ठान ली। अगर उनका रस्याण शादी समारोह में पहुंचता है तो सब कुछ वेडिंग थीम पर होता है। वह प्रीति भोज, मंगल स्नान, बारागत स्वागत और विदाई तक कार्यक्रम पूरी तरह से पहाड़ी तरीके से करते हैं। भोजन बनाने वाली टीम में ज्यादातर महिलाएं होती हैं। वे पारंपरिक पोशाक में दिखती हैं और जैसे पहाड़ पर भोजन तैयार होता है उसी विधि से पकवान पकाती हैं। गंजेले से पीठू कूटना, पकोड़े बनाने के लिए सिलबट्टे का इस्तेमाल, मंडवे का आटा पीसना, पहाड़ी अंदाज में दही मथी जाती है, हल्दी कूटी जाती है, दुलहन को हल्दी लगाना हो आदि चीजें उत्तराखंड संस्कृति की झलक पेश करती दिखती हैं। ■

40

हिरेशा वर्मा

संस्थापक, हेनजेन इंटर नेशनल, देहरादून

लोग अच्छी नौकरी पाने के लिए मेहनत करते हैं, ताकि उनकी जिंदगी आराम से बीत सके। लेकिन हमारे समाज में कई ऐसे उदाहरण मौजूद हैं, जिन्होंने लीक से हटकर अपना रास्ता बनाया और आज प्रेरणास्रोत बन चुके हैं। उत्तराखंड की एक ऐसी महिला हैं, जिन्होंने लोगों की मदद करने के लिए अच्छी खासी नौकरी छोड़ दी और खेती करने लगीं। जी हां, हिरेशा वर्मा देहरादून की रहने वाली हैं। उन्होंने दिल्ली से आईटी की पढ़ाई की है। 2013 में जब केदारनाथ में बादल फटने से भयानक आपदा आई, उस समय उन्होंने टीवी पर वो खौफनाक दृश्य देखा था। आपदा में लोगों की मौत और लापता होने की खबर ने उनको भीतर से झकझोर दिया। हिरेशा ने इस आपदा में पीड़ित लोगों की मदद करने की ठान ली और दिल्ली छोड़ कर उत्तराखंड पहुंच गईं। लोगों को सहायता और राहत पहुंचाने के लिए वह एक एनजीओ के साथ काम करने लगीं। बिजनस मेनेजमेंट में पीजी और केमिस्ट्री और बॉटनी में ग्रेजुएट हिरेशा ने अपना सारा ज्ञान इन महिलाओं की मदद करने में लगा दिया। उन्होंने महिलाओं को संकट से उबारने के लिए कई उपायों पर रिसर्च करना शुरू कर दिया। हिरेशा बताती हैं कि काफी सोचने के बाद उन्होंने मशरूम की खेती करने का फैसला लिया। उत्तराखंड का मौसम इसके लिए उपयुक्त है और ये ऐसा उपाय है जिससे महिलाओं की प्रॉब्लम काफी हद तक सॉल्व हो सकती है। इसके बाद हिरेशा ने देहरादून में अपने घर पर मशरूम उगाने का प्रयोग शुरू करने के लिए 2,000 रुपये खर्च किए। उनका प्रयोग सफल रहा। उन्होंने हिमाचल प्रदेश में मशरूम अनुसंधान निदेशालय में ट्रेनिंग ली और उसी साल उन्होंने 1.5 एकड़ जमीन पर पर मशरूम की खेती करने के लिए हैनजेन इंटरनेशनल की स्थापना की। 2013 में हिरेशा ने अपनी नौकरी छोड़ दी और मशरूम की खेती शुरू करने के लिए देहरादून चली गईं। उन्होंने इस क्षेत्र की 2,000 से ज्यादा महिलाओं को स्थायी आजीविका हासिल करने और उनकी आय में वृद्धि करने में मदद की। महिलाओं को हिरेशा ने ट्रेनिंग, स्पॉन और अन्य सामग्री मुफ्त में मुहैया कराई। उनकी सफलता ने उन्हें 2015 में मशरूम की खेती के लिए उत्तराखंड राज्य पुरस्कार दिलाया। मशरूम उगाने और किसानों की मदद करने के अलावा उनके स्टार्टअप ने हाल के वर्षों में फूड प्रोसेसिंग करना भी शुरू किया है। हिरेशा के स्टार्टअप से अचार, सूप, प्रोटीन पाउडर, चाय, कॉफी और सॉस बनाना शुरू किया है, जिसे पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और पौड़ी, घरवाल और दूसरे इलाकों में बेचा जाता है। हिरेशा बताती हैं कि उनके कारोबार से कुल मिलाकर सालाना 1.5 करोड़ रुपये की बिक्री होती है। वह बताती हैं कि जब उन्होंने पहल की, तो दोस्त और परिवार के लोग हंसे थे। ■

41

नितिन रावत

मैनेजिंग पार्टनर, पृथ्वीराज इंडस्ट्रीज, देहरादून

नितिन रावत उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले के धुमाकोट ब्लॉक के नैनीडंडा के रहने वाले हैं। वह पृथ्वीराज इंडस्ट्रीज के मैनेजिंग पार्टनर और सह संस्थापक हैं। कंपनी की स्थापना 2015 में हुई, लेकिन उनके पास करीब एक दशक का अनुभव है। फ्लो कंट्रोल प्रोडक्टस, वेलहेड उपकरण, मैनिफोल्ड फिटिंग्स और क्रिसमस ट्री उपकरणों के निमार्ता और आपूर्तिकर्ता के तौर पर कंपनी को अमेरिकन पेट्रोलियम इंस्ट्यिूट की मान्यता मिली है। मुख्य रूप से कंपनी ड्रिलिंग यूनिटों की जरूरतों को पूरा करती है। बिजनस डीलिंग के साथ नितिन वैश्विक व्यापार विकास और आयात-निर्यात की गहरी समझ रखते हैं। कंपनी का फोकस सुरक्षा, विश्वसनीयता और समय पर डिलिवरी पर होता है। इनोवेशन के जरिए ग्रोथ नितिन रावत का विजन है। अमेरिका, यूरोप के बाजार और एमईएनए क्षेत्र में एक्सपोजर के साथ नितिन वैश्विक स्तर पर संबंध विकसित करने में विशेषज्ञता रखते हैं। ऑयलफील्ड उपकरण विनिर्माण और निर्यात को संभालने के साथ ही वेंडर्स के साथ तकनीकी चर्चा, उपकरणों के चयन और उपकरणों की खरीद में लंबा अनुभव उनके पास है। प्रोडक्ट विकास, अनुसंधान एवं विकास, परियोजना प्रबंधन, लागत, डिजाइन और इंजीनियरिंग प्रबंधन से जुड़े कार्यों को बेहतर तरीके से समझते और संभालते हैं। उत्कृष्ट रचनात्मक कौशल, समस्या का समाधान खोजना, लीडरशिप, कम्युनिकेशन समेत वह एक प्रभावी लीडर की हर खूबियां रखते हैं। कंपनी ने दूसरे साल में ही 2 मिलियन डॉलर का टर्नओवर हासिल किया और प्रोडक्शन एवं पीपीसी, गुणवत्ता आश्वासन, खरीद और रसद, वेंडर डेवेलपमेंट, इन्वेंट्री मैनेजमेंट, विनिर्माण इंजीनियरिंग, एक्सपोर्ट सेल्स जैसे बिजनस ऑपरेशन को बेहतरीन तरीके से संभाला गया।

अमेरिका, यूके, कुवैत और संयुक्त अरब अमीरात में कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम शुरू हुआ। सुरक्षा, उत्पादकता, कस्टमर पीपीएम, ग्राहक वितरण प्रदर्शन, लागत में कमी, विनिर्माण खर्च जैसे प्रमुख परफॉर्मेंस इंडिकेटर्स अवधारणा के बारे में सोचा गया और उसकी निगरानी की। नितिन के मुख्य कौशल की बात करें तो स्ट्रैटिजिक प्रोजेक्ट प्लानिंग एंड मैनेजमेंट, मल्टिपल प्लांट ऑपरेशंस, प्रोडक्ट डिजाइन और विकास, उत्पादन योजना और नियंत्रण, व्यापार विकास रणनीतियां, वित्त और रखरखाव, तकनीकी प्रशिक्षण, बजट और लागत, प्रक्रिया में सुधार, नए बिजनस का ऑपरेशन, संसाधन प्रबंधन आदि शामिल है। ■

42

आशीष वैष्णव

सीईओ, वी ग्रुप इंटरनेशनल, गुरुग्राम

शौक बड़ी चीज है। यह डायलॉग तो आपने जरूर सुना होगा। हमारे समाज में कई लोग ऐसे होते हैं जो शौक में ही करियर ढूंढ लेते हैं। उत्तराखंड में जन्मे आशीष वैष्णव ने भी कुछ ऐसा ही किया। पिता ने उन्हें गोल्फ से परिचित कराया तो यह उनका पसंदीदा खेल बन गया। जीवन के महत्वपूर्ण सबक मिले और स्पोर्ट्स ने उन्हें एक उद्यमी के रूप में गोल्फ के क्षेत्र में और अधिक संभावनाएं तलाशने के लिए प्रेरित किया। वह एवी ग्रुप इंटरनेशनल के सीईओ हैं। आज वह गोल्फ केंद्रित रियल एस्टेट संपत्तियों को डिजाइन और विकसित कर रहे हैं। उद्यमी के तौर पर आशीष ने अपना सफर 2004 में शुरू किया। एवी गोल्फ डिजाइन भारत में विभिन्न रियल एस्टेट समूहों के लिए कई तरह के गोल्फ कोर्स डिजाइन करती है। उन्हें मालिकों और प्रमोटरों के साथ मिलकर काम करने का अवसर मिला, जिन्होंने आशीष की छिपी प्रतिभा को देखा। उन्होंने रियल एस्टेट प्रोजेक्ट के विकास के लिए विभिन्न पहलुओं पर सलाह दी। प्रोजेक्ट में गोल्फ कोर्स की योजना और डिजाइन के लिए उनके पास मौके बढ़ते गए। आगे चलकर एवी ग्रुप इंटरनेशनल की नींव पड़ी। आज के समय में एवी ग्रुप इंटरनेशनल लाइफस्टाइल रियल एस्टेट प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, गोल्फ कोर्स आर्किटेक्चर, रिजॉर्ट डिजाइन, लैंडस्केप डिजाइन, स्पोर्ट्स एंड टूरिज्म इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के क्षेत्र में सबसे भरोसेमंद और प्रतिष्ठित डिजाइन और विकास फर्मों में से एक है। यह कंपनी बॉब हंट की इंटरनेशनल डिजाइन ग्रुप (यूके) के साथ मिलकर काम करती है। इस समय आशीष और उनके बिजनस पार्टनर जॉन हंट 5 एकड़ से 1200 एकड़ तक की अलग-अलग 25 परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं। वह अहमदाबाद में 200 एकड़ में फैली गोल्फ आधारित टाउनशिप की प्लानिंग और डिजाइन पर काम कर रहे हैं। वह चेन्नई में भी गोल्फ रिजॉर्ट और टाउनशिप की डिजाइन और टाउनशिप पर काम कर रहे हैं। इतना ही नहीं, जॉन और आशीष मिलकर देश के कई बिजनस समूहों के लिए मौजूदा गोल्फ कोर्स को अंतरराष्ट्रीय मानक के हिसाब से अपग्रेड भी कर रहे हैं। वह एटीएस, सेंट्रल पार्क, सुषमा, पूजा क्राफ्टेड होम्स, राइज, द हेमीस्फेयर, ऐस ग्रुप, मैक्स ग्रुप आदि जाने माने रियल एस्टेट डेवेलपर्स के साथ काम कर रहे हैं और यूके, यूएई, बांग्लादेश, घाना, जॉर्जिया आदि कई देशों में भी रियल एस्टेट को एक नया आयाम दे रहे हैं। प्रिंसिपल डिजाइनर, गोल्फ कोर्स आर्किटेक्ट, मास्टर प्लानर, निवेशक, चीफ एडवाइजर के तौर पर रियल एस्टेट सेक्टर में नई इबारत लिख रहे आशीष वैष्णव पहाड़ से ताल्लुक रखते हैं। ने दिल्ली यूनिवर्सिटी, आईआईएम कोझिकोड, आईआईएम कोलकाता से पढ़ाई की। ■

43

गोपाल दत्त उप्रेती

एग्रो इंडस्ट्री एंड प्रोगेसिव फॉर्मिंग, रानीखेत

पेशे से सिविल इंजीनियर भले ही हों लेकिन गोपाल उप्रेती की पहचान उत्तराखंड में जैविक फॉर्मिंग को इंडस्ट्री की दिशा देने वाले प्रोग्रेसिव फॉर्मर के तौर पर होती है। गोपाल दत्त उप्रेती का जन्म 5 जून 1973 को उत्तराखंड के रानीखेत में एक किसान परिवार में हुआ। घर में खेती-किसानी का माहौल मिला तो इसके बीज तो अंकुरित होने ही थे। हालांकि शिक्षा पूरी करने के बाद सिविल इंजीनियरिंग की। इसके बाद कुछ समय तक काम किया। लेकिन फिर कुछ अलग करने का फैसला किया और साल 2010 में जैविक सेब की विभिन्न किस्मों को उगाना शुरू किया। आज उन्हें उत्तराखंड के एप्पल मैन के रूप में भी जाना जाता है। सेब की खेती और इंडस्ट्री के बारे में गहरी जानकारी रखने वाले गोपाल उप्रेती आज बड़े पैमाने पर जैविक खेती कर रहे हैं। वह दीघार्यु नर्सरी, फल उत्पादन और फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में सबसे ज्यादा सक्रिय हैं। इसके साथ ही वह दिल्ली में अडंभा इंफ्रास्ट्रक्चर प्रा. लि. के साथ इस सेक्टर में भी काम करते हैं।

अखरोट के पेड़ों का अध्ययन करने के लिए 2013-2015 के बीच फ्रांस, जर्मनी और नीदरलैंड का दौरा किया। इसके बाद उत्तराखंड में सब्जियों एवं फलों के लिए निरंतर प्रयासों के साथ 2500 सेब के पौधे के साथ वर्ष 2015 में अपना पहला प्रमाणित जैविक सेब का बाग स्थापित किया। सेब और उच्च जैविक सब्जियों की खेती करने के उनके अथक प्रयासों को अनेक संगठनों से मान्यता मिल है। गोपाल उप्रेती को एग्रो इंडस्ट्री में काम करने के लिए जिला, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार मिल चुके हैं। 2016 उत्तराखंड सरकार द्वारा उद्यान पंडित पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके बाद 2019 में देवभूमि बागवानी पुरस्कार, 2019-20 में कृषि भूषण सम्मान, 2021 में गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (पंतनगर) द्वारा प्रगतिशील कृषक सम्मान से सम्मानित किया गया।

2015 से गोपाल उप्रेती ने धनिया, हल्दी, लहसुन और केले सभी में जैविक तकनीकों का उपयोग करके कृषि शुरू की। अपने बहुमुखी अनुभव और व्यापक कृषि ज्ञान के साथ वह सबसे लंबे धनिया (7 फीट 1इंच) का विश्व रिकॉर्ड बनाने में कामयाब रहे और (7 फीट 6 इंच) और गिनीज बुक, एशिया बुक और लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में जगह बनाई। गोपाल उप्रेती के नाम गिनीज बुक द्वारा मान्यता प्राप्त पहले भारतीय जैविक किसान होने की असाधारण उपलब्धि दर्ज है। राज्य के पहाड़ी इलाकों से पलायन रोकने के लिए वह चंपावत, अल्मोड़ा, नैनीताल, पौड़ी जैसे जिलों में नौजवानों को कृषि एवं बागवानी संबंधी कार्य का प्रशिक्षण देते हैं। जिससे आज युवा किसान अपने क्षेत्र में रहकर ही आजीविका और रोजगार के नए अवसरों का लाभ दूसरों को भी प्रदान रहें हैं। ■

44

राहुल रावत

सह-संस्थापक, दिगंतरा, बेंगलुरु

राहुल रावत दिगंतरा के सह-संस्थापक और मुख्य परिचालन अधिकारी हैं। भौतिकी में गहरी रुचि और ऑप्टिक्स डोमेन में अनुभव रखने वाले इंजीनियरिंग ग्रेजुएट राहुल रावत साल 2018 मेंअपने सहयोगियों के साथ दिगंतारा की सह-स्थापना की। तीन साल से अधिक की प्रबंधकीय विशेषज्ञता के साथवह सीओओ यानी मुख्य परिचालन अधिकारी के रूप में दिगंतारा के संचालन और वित्त की देखरेख करते हैं। तीन युवाओं द्वारा स्थापित बेंगलुरु स्थित दिगंतारा, अंतरिक्ष से ही अंतरिक्ष मलबे को ट्रैक करता है। यह दुनिया की उन मुट्ठी भर कंपनियों में से एक है, जो ऐसा कर रही हैं। इन-ऑर्बिट स्पेस मलबे को मॉनिटर करते हैं। उन्होंने एक सॉफ्टवेयर सॉल्यूशन के साथ हार्डवेयर को जोड़ा है। एक नैनो उपग्रह से जुड़े हार्डवेयर, जो अंतरिक्ष में जाते हैं, उनमें एक लेजर मॉड्यूल है, जो 1 सेमी और 20 सेमी आकार के बीच की वस्तुओं को ट्रैक कर सकता है। डेटा को पृथ्वी पर रिले किया जाता है और वस्तु के भविष्य के प्रक्षेपवक्र की भविष्यवाणी करने के लिए संसाधित किया जाता है। अपने कॉलेज के वर्षों के दौरान, राहुल अंतरिक्ष अन्वेषण परियोजना पर काम कर रहे साठ से अधिक अंतर-अनुशासनात्मक इंजीनियरिंग उत्साही लोगों की एक टीम का प्रबंधन किया। इंटरनेट ऑफ थिंग्स सेक्टर में उनके पास पर्याप्त अनुभव है, जिन्होंने रिमोट डेटा डाउनलोड के लिए इंटरनेट टू ऑर्बिट गेटवे के साथ एक उद्योग-ग्रेड नियंत्रण केंद्र और साइबर ने टि क्स ग्राउंड स्टेशन बनाने के प्रयास का नेतृत्व किया है। दिगंतारा अंतरिक्ष संचालन और स्थितिजन्य जागरूकता की कठिनाइयों को दूर करने के लिए दो-आयामी प्रणाली विकसित कर रहा है। इसका लक्ष्य सैटेलाइट ऑपरेटरों और अन्य अंतरिक्ष हितधारकों (रक्षा, एंश्योरेंस कंपनियों, वाणिज्यिक अंतरिक्ष कंपनियों) के लिए संचालन को आसान बनाना है। दिगंतारा एक इन-ऑर्बिट एलआईडीएआरसिस्टम का उपयोग करके लोअर अर्थ ऑर्बिट में 1 सेमी या उससे अधिक की निवासी अंतरिक्ष वस्तुओं का पता लगाने के लिए एक सक्रिय कक्षीय निगरानी हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म बना रहा है। उत्पन्न डेटा का उपयोग अंतरिक्ष क्षेत्र के हितधारकों और नियामकों द्वारा उनकी संपत्ति से जुड़े जोखिमों की पहचान करने और उन्हें कक्षा में टकराव से बचाने के लिए किया जाएगा। स्पेस एमएपी (मैप) - स्पेस मिशन एश्योरेंस प्लेटफॉर्म - गूगल मैप्स की तरह ही शक्तिशाली और परिष्कृत होगा, जो अंतरिक्ष संचालन और खगोल विज्ञान के लिए एक आधारभूत परत के रूप में काम करेगा। एस-एमएपी का उद्देश्य डेटा फीडबैक लूप के माध्यम से सभी अंतरिक्ष संचालन के लिए एक समाधान प्रदान करना है, यानी अंतरिक्ष स्थिति जागरूकता के लिए सभी डेटा स्रोतों से डेटा एकत्र करना। ■

45

परिवर्धन डांगी

हेंप स्टार्टअप और उद्यमिता, अल्मोड़ा

परिवर्धन का जन्म वर्ष 1989 में दिल्ली में हुआ। शुरुआती शिक्षा भी आजकल के मिडल क्लास परिवार की सोच के मुताबिक अंग्रेजी माध्यम वाले पब्लिक स्कूल में हुई। गणित और विज्ञान विषयों में हमेशा अभिरुचि रही। लीक से हट कर सोचने और अपने गांव से लगाव रखने वाले परिवर्धन ने सामूहिकता से जुड़ी ग्रामीण पत्रिका 'चुनौती'के मुख पृष्ठ का चित्रांकन चौथी कक्षा के दौरान किया। यह उसकी रचनात्मकता का पहला परिचय था। आने वाले वर्षों में पहले बायो टेक्नोलॉजी की पढ़ाई की, फिर मैकेनिकल इंजीनियरिंग और उसके बाद प्रतिष्ठित भारतीय डिजाइन संस्थान छप्क गांधीनगर से चार साल की डिजाइनिंग में मास्टर की डिग्री प्राप्त की। रचनात्मक अभिरुचि और हटकर कुछ करने के पैशन ने उसको कॉरपोरेट से मोहभंग करवा दिया। कुछ एक साल बेंगलुरु, पुणे और दिल्ली में अलग-अलग कंपनियों में काम करने के बाद, नवाचार का प्रयोग करने की सोच के साथ भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा आमंत्रित खेती पर आधारित उद्यम का विचार यानि बिजनेस आइडिया 'भांग के बीज से तेल के नए व्यवसायिक उत्पाद जैसे तेल, हेंप आटा, प्रोटीन पाउडर, हेंप हार्ट यानी प्रोटीन सीड्स आदि'विकसित करके उसके औद्योगिक उपयोग का विचार रखा। परिवर्धन ने उत्तराखंड सरकार की भांग नीति 2016 के बारे में तब पढा था जब वह डिजाइन में मास्टरी कर रहे थे। इसी दौरान व्यवसायिक और औद्योगिक भांग के उपयोग और हजारों उत्पादों के बारे में सोचा। यह विचार तब जोर पकड़ने लगा जब फरवरी 2019 में अल्मोड़ा जिला अधिकारी के मुख्यालय में पहला लाइसेंस के लिए आवेदन किया। इस बीच स्थानीय परम्परागत भांग के बीज से तेल निकालने और उसके परीक्षण पर काम किया। यह सुनिश्चित किया कि भांग से निकाले तेल में दिल, दिमाग और त्वचा के लिए लाभदायक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। भांग के बीज 'कोल्ड प्रेस तरीके'से पिरोया जाता है। तेल का परीक्षण करके यह पाया गया कि, इसमें नशे वाले पदार्थ नहीं हैं। वैसे पहाड़ में रहने वाले सभी लोग यह भलीभांति जानते हैं कि, भांग के बीजों में नशा नहीं होता है। फिर भी जब ब्यापारिक दृष्टि से देखा जाए तो तेल सहित अन्य उत्पादों में नशे वाले तत्व नहीं होने या मानक के तहत दिए माप से नीचे होने का प्रमाण टेस्टिंग से ही तय ही सकता है। इसी टेस्टिंग में लाखों का खर्चा और खूब समय लगा। सरकार भी भांग के उत्पादों को सकारात्मक नजर और गेम चेंजर की तरह देख रही है। व्यवसायिक भांग की खेती और उससे प्राप्त उत्पाद सीधी बोली में रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरतों को पूरा करती है। बीज से तेल निकालने के बाद, प्रोटीनयुक्त आटा, भांग के रेशों से उत्तम गुणवत्ता वाला लेलिन और डंठल से निर्माण में इस्तेमाल होने वाले ईट, टाइल जैसे उत्पाद बन रहे हैं। ■

46

सत्यम दरमोड़ा

संस्थापक आईटूईवन, देहरादून

स्टार्टअप के जरिए सफलता का सफर तय करने वाले सत्यम दरमोड़ा क्यों खास हैं, इसे कुछ ऐसे समझिये। 11 दिसंबर 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पीएम-वाणी स्कीम लांच की। इस योजना के अंतर्गत जिसके पास एक्ट्रा इंटरनेट है, वह उसे बेच सकता है। मान लीजिए आपने कोई इंटरनेट प्लान लिया, लेकिन आप पूरा इस्तेमाल नहीं करते। आप उसे बेच सकते हैं। पहले यह संभव नहीं था, लेकिन सत्यम की कंपनी आईटूईवन यानी इंफॉर्मेशन टू एव्री वन की तकनीक से संभव है। आईआईटी दिल्ली के साथ मिलकर शुरू किए गए उनके स्टार्ट-अप को पूरे विश्व में सराहा जा रहा है। उनकी कंपनी भारत की पहली कंपनी है, जो पीएम-वाणी स्कीम के लिए चुनी गई। इंटरनेट की तकनीक की लागत को इसने करीब 90 प्रतिशत तक कम किया है। सत्यम और उनकी कंपनी को फॉर्ब्स ने एशिया-100 की लिस्ट में शामिल किया जा चुका है।

सत्यम उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग के सुदूरवर्ती दरमाड़ी गांव के रहने वाले हैं। वो उन लोगों में से हैं जो कहने में नहीं, कुछ करने में विश्वास रखते हैं। सत्यम का परिवार वर्तमान में देहरादून में रहता है। सत्यम दरमोड़ा ने उत्तराखंड के छोटे से गांव से निकलकर न सिर्फ आईआईटी और आईआईएम जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ाई की, बल्कि दुनिया की नामी कंपनियों में भी काम किया। सत्यम के पिता एक शिक्षक हैं। सत्यम की शुरूआती पढ़ाई गोपेश्वर में हुई। आईआईटी दिल्ली से 2003 में बीटेक और 2005 में आईआईएम बेंगलरू से एमबीए किया। साथ ही पढ़ाई के बाद सत्यम ने नामी मल्टी नेशनल कंपनियों में काम किया। 2016 में आईटूईवन यानी इंफॉर्मेशन टू एव्री वन नाम से स्टार्टअप शुरू किया, वहीं अब सत्यम का अनूठा स्टार्ट-अप देश में सस्ता और सुलभ हाईस्पीड इंटरनेट मुहैया कराने की दिशा में मील का पत्थर साबित हो रहा है। शुरू में दो साल कंपनी आईआईटी दिल्ली के कैंपस से चलाई।

फोर्ब्स ने एशिया 100 टू वॉच लिस्ट में सत्यम की कंपनी को शामिल करते हुए लिखा कि एशिया में छोटी कंपनियां और स्टार्ट-अप बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में जब दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं महामारी से जूझ रही है, ये उत्साही कंपनियां विकास की राह पर हैं। सत्यम की कंपनी ने ऐसी तकनीक बनाई, जिससे इंटरनेट लोगों तक बहुत कम मूल्य में आसानी से उपलब्ध हो पाए। बड़ी टेलीकॉम कंपनियां जहां उपकरणों पर 35 से 40 हजार रुपये खर्च करती है, उसकी लागत को वो इनोवेशन कर एक हजार से 1500 पर ले आए। इस वजह से प्रतिदिन सिर्फ पांच रुपये में 50 एमबीपीएस की स्पीड से अनलिमिटेड इंटरनेट मुहैया कराना संभव हो सका। ■

47

संजय सत्यवली

संस्थापक, हिलांस एग्रोटेक, सल्ट

बचपन गांव में ही बीता। 5वीं तक की पढ़ाई गांव में ही की। उसके बाद पढ़ने दिल्ली आ गए। हालांकि गांव से नाता नहीं टूटा। समय मिलता तो संजय सत्यवली सल्ट अपने गांव पहुंच जाते। बचपन में अपने पिताजी के साथ उन्होंने खेतों में भी काम किया है। ऐसे में गांव से लगाव लगातार बना रहा। गांव के लिए कुछ करने की तमन्ना हमेशा बनी रहती। दिसंबर 2016 में उन्होंने अपने गांव झिमार में एक गौशाला का निर्माण करवाया। पिछले 15 साल से बंजर पड़ी 30 नाली जमीन में जैविक खेती की शुरूआत की। संजय की कोशिशों का ही नतीजा है कि आज यह क्षेत्र हरा भरा दिखता है। यहां एक गेल गाला प्रजाति के सेब के 80 पौधों का बगीचा विकसित किया गया है और अखरोट के पौधे भी लगाए गए हैं। साथ में पहाड़ी हल्दी अदरक एवं अन्य कई प्रकार की सब्जियां भी उगाई जा रही हैं। पॉलीहाउस में पौध भी तैयार की जाती है। 17 जनवरी 2022 को उन्होंने हिलांश एग्रोटेक लिमिटेड की स्थापना अपने गांव झिमार सल्ट में की। इसके तहत मसाले, धूप, पहाड़ी आचार, बुरांश, माल्टा, नींबू आदि जूस एवं पहाड़ी दाल, लाल चावल, झंगोरा, मंडुवा आटा आदि अनेक प्रकार के उत्पाद महिलाओं द्वारा तैयार कर बाजार तक पहुंच रहे हैं। आज इन चीजों की मार्केटिंग सल्ट क्षेत्र से लेकर दिल्ली तक हो रही है। इस कार्य में संजय का एक समूह है जो लगातार उत्तराखंड में स्वरोजगार को हर घर हर गांव तक पहुंचाने में साथ खड़ा है।

संजय सत्यवली कहते हैं कि हमारा एक ही संकल्प है कि उत्तराखंड का हर युवा स्वरोजगार को अपनाए ओर उत्तराखंड को समृद्ध बनाए। शारदा देवी संस्कृत महाविद्यालय राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली से उन्होंने स्नातक किया है। 2005 से अपना व्यवसाय कर रहे हैं। दिल्ली के बुराड़ी में रेडीमेड गारमेंट्स एवं फेब्रिक का रिटेल शोरूम भी है जिसमें उत्तराखंड के लोग काम करते हैं। उनका कहना है कि स्वरोजगार से गांवों में खुशहाली आएगी और इससे राज्य और देश आत्मनिर्भर बनेगा। ■

48

परिधि भंडारी

संस्थापक, मौल्यार पार्टनर्स, दिल्ली

परिधि भंडारी एक इंटीरियर आर्किटेक्ट और क्रिएटिव हेड हैं जो उत्तराखंडी कला, संस्कृति और डिजाइन को बढ़ावा दे रही हैं। उनका जन्म देहरादून में हुआ। उन्होंने दिल्ली पब्लिक स्कूल मथुरा रोड, नई दिल्ली से 12वीं की परीक्षा पास की। दिल्ली यूनिवर्सिटी से बीएससी की पढ़ाई के बाद उन्होंने मैकिन्से एंड कंपनी में एक साल से अधिक समय तक एनालिस्ट के तौर पर काम किया। लेकिन उनका मन कहीं और लग चुका था। वह इंटीरियर डिजाइन के अपने पैशन को आगे बढ़ाना चाहती थीं और ऐसे में उन्होंने मैकिन्से एंड कंपनी में अपनी कॉर्पोरेट नौकरी छोड़ दी। वह सुशांत स्कूल ऑफ डिजाइन पहुंचीं। उनकी पृष्ठभूमि ने उन्हें क्लाइंट्स को समझने और उन्हें उनकी शैली में रहने में मदद की। मास्टर्स की पढ़ाई के दौरान उन्होंने कुमाऊं की ऐपण कला पर प्रोजेक्ट किए और गढ़वाल की 'कोटी बनाल' वास्तुकला का व्यापक अध्ययन किया।

इंटीरियर डिजाइन में मास्टर्स करने के बाद परिधि भंडारी ने नई दिल्ली में Molyar Partner LLP फर्म खड़ी की। वह इस फर्म की क्रिएटिव हेड और संस्थापक पार्टनर हैं। परिधि और उनकी फर्म ने गोवा, दिल्ली-एनसीआर, देहरादून, मसूरी में कई आतिथ्य, आवासीय और कमर्शियल प्रोजेक्ट्स को सफलतापूर्वक पूरा किया है। उन्हें प्रॉमिसिंग इंडियन सोसाइटी दिल्ली द्वारा कला और संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए प्रॉमिसिंग इंडियन अवॉर्ड्स 2019 से सम्मानित किया गया है। कर्नल डीपी डिमरी द्वारा हिमालय के उद्यमियों पर लिखी पुस्तक में उभरती युवा उद्यमी के रूप में परिधि भंडारी को भी शामिल किया गया। वह मोलयार रिसोर्स फाउंडेशन की संस्थापक भी हैं। इसके माध्यम से वह स्थानीय कारीगरों की सहायता करने के साथ ही उत्तराखंड की कला, संस्कृति और डिजाइन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित कर रही हैं। ■

49

सुरेश पंत

निदेशक, सेल प्रिंट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई

उत्तराखंड की माटी के सपूत सुरेश पंत सेल प्रिंट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के बोर्ड मेंबर और निदेशक हैं। कंपनी मुंबई रजिस्ट्रार कार्यालय में पंजीकृत है। यह एक गैर-सरकारी कंपनी है जो 2002 में शुरू हुई। यह एक प्राइवेट गैर-सूचीबद्ध कंपनी है।

कंपनी की पिछली वार्षिक आम बैठक सितंबर 2017 में हुई थी। कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय के अनुसार कंपनी ने पिछली बार मार्च 2017 में अपनी वित्तीय स्थिति को अपडेट किया था। एसईएल प्रिंट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कंपनी मुख्य रूप से विनिर्माण (कागज और कागज के उत्पाद, प्रकाशन, मुद्रण, रिकॉर्डेड मीडिया के रीप्रोडक्शन) बिजनेस से जुड़ी है और 20 साल से काम कर रही है। वर्तमान में बोर्ड के सदस्यों और निदेशकों की बात करें तो सुरेश रमेशचंद्र पंत, पारुल सुरेश पंत और अक्षय सुरेश पंत हैं।

पिछले दो दशक में सेल प्रिंट इंडिया ने रीप्रोडक्शन के क्षेत्र में सफलता के नए मुकाम हासिल किए हैं। ■

50

कविता बिष्ट नेगी

संस्थापक, स्टाइलजर, नोएडा

कविता बिष्ट नेगी का जन्म उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के कनकोट नामक गांव में हुआ। पिता सेना में कार्यरत थे इसकी वजह से प्राथमिक शिक्षा विभिन्न राज्यों में हुई और उच्च शिक्षा नैनीताल विश्व विद्यालय से पूरी की। उन्होंने बहुराष्ट्रीय कंपनियों एनआईआईटी टक्नोलोजी, सैंट गोबेन, स्पाइस टेक्नोलोजी के साथ 10 साल काम करने के पश्चात 2018 में नोएडा में महिलाओं के कपड़ों के ब्रांड स्टाइलजर की स्थापना की। स्टाइलजर महिलाओं के लिए फैशन परिधान और एक्सेसरीज ब्रांड है। इसके प्रोडक्ट्स में एथनिक कपड़े, कुर्ता और सेट, पैंट और पलाजो, स्कर्ट और दुपट्टा, बैग, जूते, फैशन के गहने आदि शामिल हैं। यह न्यूनतम राशि से अधिक की खरीदारी के लिए मुफ्त शिपिंग की पेशकश करता है। ऑनलाइन मार्किट को फोकस कर स्टाइलजर अमेजन, फ्लिपकार्ट, लिमरॉयड, शॉपक्लूएस, स्नैपडील जैसे विभिन ई-पोर्टल्स के साथ जुड़कर अच्छा कारोबार कर रहे है। उत्तराखंड से होने के लगाव की वजह से वर्ष 2018 मे पहला स्टोर उत्तराखंड के हल्द्वानी शहर से ही स्टार्ट कर रुद्रपुर, बाजपुर में भी स्टाइलजर के स्टोर खोले और वर्तमान में देश के हर शहर में स्टाइलजर का स्टोर हो इस विजन से कार्य कर रहे है। वर्ष 2019 में उन्हें एशिया वन पत्रिका द्वारा महिला सशक्तिकरण सिद्धांत नेतृत्व पुरस्कारों के लिए नामांकित किया गया। ■

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

इफको नैनो यूरिया (तरल)

विश्व का पहला नैनो उर्वरक

फसल उपज बढ़ाए

किसान की लागत करे कम

पर्यावरण प्रदूषण रोकने में सहायक

मृदा की पोषण गुणवत्ता बढ़ाए

500 मिली बोतल मात्र ₹ 240/- में

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones : 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website : www.iffco.coop

Let's make Swachh Bharat a reality

G. S. Rawat

Chairman & Managing Director
Hythro Engineers Pvt. Ltd.
Supreme Advertising Pvt. Ltd.
Hancraft Expo Designs Pvt. Ltd.

Support Swachh Bharat
Initiative of Government of India

302 - 303, BHIKAJI CAMA BHAWAN 11,
BHIKAJI CAMA PLACE, NEW DELHI-110 066
contact# 011-26186038, 26180238
hythroengineers@airtelmail.in, supremeadvertising@airtelmail.in

DEERGHAYU ORGANICS

RNI REGD. DELBIL/2016/69806

ORG/SC/211/004958

NON-GMO
CHEMICAL-FREE
100% ORGANIC

DEERGHAYU HIMALAYAN ORGANIC PRODUCTS

Committed to healthy and chemical free kitchen

Deerghayu Products can be order from our website and you can also shop from our business partners:
Amazon, Flipkart, Shopclues, 1mg

SCAN TO SHOP

www.deerghayuorganics.com
contact@deerghayuorganics.com
Uttarakhand Farm:
Jhalori, Khirkhet, Jalali Masi Road, Ranikhet,
Distt. Almora, Uttrakhand 263645
/deerghayuorganics

Promoted By:
Deerghayu Himalayan Organics Pvt. Ltd., A - 770, Sector - 19, Noida - 201301